शारदीय नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

आज की खबर आज ही

जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी

चेतना मंच

वर्ष : 26 | अंक : 283 | website:www.chetnamanch.com | नोएडा, शुक्रवार, 04 अक्टूबर, 2024 | Chetna Manch | Chetna Manch | मूल्य 2.00 रुपया | पेज: 8

द्वितीय ब्रह्मचारिणी

आज मां ब्रह्मचारिणी की पूजा अर्चना हो रही है। इनका उद्भव ब्रह्मा जी के कमंडल से माना जाता है। ब्रह्मा जी सृष्टि के सर्जक हैं। ब्रह्मचारिणी उनकी शक्ति। जब मानसपुत्रों से सृष्टि का विस्तार नहीं हो सका, तो ब्रह्मा जी की इसी शक्ति ने सृष्टि का विस्तार किया। इसी कारण स्त्री को सृष्टि का कारक माना गया। ब्रह्मचारिणी देवी ज्ञान, वैराग्य और ध्यान की अधिष्ठात्री हैं। इनके एक हाथ में कमंडल और दूसरे में रुद्राक्ष की माला है।

उपासना मंत्र

या देवी सर्वभूतेषु सृष्टि रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

मिर्जापुर में 10 मजदूरों की मौत

छत की ढलाई कर वापस लौट रहे थे गांव

तेज रफ्तार ट्रक ने ट्रैक्टर में मारी टक्कर

मिर्जापुर (एजेंसी)। मिर्जापुर में देर रात सड़क हादसे के बाद 10 परिवारों में कोहराम मचा हुआ है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व मिर्जापुर की सांसद अनुप्रिया पटेल ने इस हादसे पर शोक व्यक्त किया है।

मिर्जापुर के कछवां थाना क्षेत्र के प्रयागराज-वाराणसी मार्ग पर स्थित कटका गांव के पास बृहस्पतिवार की रात भीषण सड़क दुर्घटना हुई है। छत की ढलाई कर वापस आ रहे ट्रैक्टर सवार मजदूरों को पीछे से एक ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। इसमें 10 लोगों की मौत हो गई। गंभीर रूप से घायल तीन लोगों को इलाज के लिए ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर किया है। मौके पर एसपी सहित प्रशासन और पुलिस के अधिकारी पहुंचे। सुबह तक बचाव कार्य चलता रहा।

जानकारी के मुताबिक भदोही जिले के औराई थाना क्षेत्र के तिउरी गांव में छत की ढलाई का काम समाप्त कर देर रात ट्रैक्टर से चालक सहित 12 मजदूर वाराणसी के मिर्जामुराद थाना अंतर्गत अपने गांव बीरबलपुर लौट रहे थे। ट्रैक्टर के पीछे पीछे बाइक से मजदूरों का मेठ भी चल रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार औराई की तरफ से आ रहा ट्रक अनियंत्रित (शेष पृष्ठ-4 पर)

प्रधानमंत्री ने जताया शोक

मिर्जापुर के सड़क हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हादसे के प्रति गहरी संवेदना प्रकट की है। मृतकों के परिवारों में प्रत्येक को दो लाख रुपये की मदद की घोषणा की है। घायलों का इलाज बीएचयू के ट्रॉमा सेंटर में चल रहा है। प्रधानमंत्री ने घायलों के समुचित इलाज का भी निर्देश दिया है।

मुख्यमंत्री ने व्यक्त की संवेदनाएं

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिर्जापुर में हुई सड़क दुर्घटना में हुई जनहानि पर गहरा दुःख प्रकट किया है। सीएम योगी ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। उन्होंने प्रभु श्रीराम से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करते हुए शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

तिरूपति के लड्डू प्रसाद में मिलावट की जांच करेगी SIT

नई दिल्ली (एजेंसी)। तिरूपति के लड्डू प्रसाद में मिलावट पर सुप्रीम कोर्ट बेहद सख्त है। सुप्रीम कोर्ट ने आंध्र प्रदेश के तिरुमाला में श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर में प्रसाद के रूप में परोसे जाने वाले लड्डू बनाने में पशु चर्बी के इस्तेमाल के आरोपों की जांच के लिए एक नई स्वतंत्र एसआईटी गठित करने का आदेश दिया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक, एसआईटी में सीबीआई के दो अधिकारी, आंध्र प्रदेश पुलिस के दो अधिकारी और एफएसएसएआई का एक वरिष्ठ अधिकारी होगा। सीबीआई निदेशक एसआईटी जांच की निगरानी करेंगे।

इससे पहले मामले की सुनवाई के दौरान केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट से (शेष पृष्ठ-4 पर)

माता की जोत ला रहे श्रद्धालु हादसे में घायल

कैंटर ने ट्रैक्टर-ट्रॉली ने मारी टक्कर

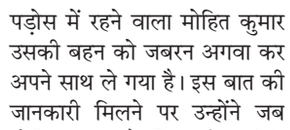

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। नवरात्र के पहले दिन दिल्ली के कालकाजी मंदिर से माता की जोत लेकर आ रहे श्रद्धालुओं की ट्रैक्टर ट्राली में कैंटर चालक ने टक्कर मार दी। इस हादसे में ट्रैक्टर ट्राली में सवार कई श्रद्धालु घायल हो गए। वहीं थाना बीटा-2 क्षेत्र में वेगनर कार की टक्कर लगने से एक 6 वर्षीय बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गया। टक्कर की वजह से बच्चों के फेफड़े फट गए जिस कारण उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

तुस्याना गांव निवासी योगेश शर्मा ने थाना फेज दो में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह तथा अन्य गांव वाले गुरुवार को दिल्ली स्थित कल्काजी मंदिर से माता रानी की जोत लेकर वापस घर आ रहे थे।

सेक्टर 135 के पास पीछे से तेज गति में आ रहे केंटर चालक ने उनकी ट्रैक्टर ट्राली में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से ट्रैक्टर ट्राली पलट गई और उसमे बैठे लोग घायल हो गए। हादसे के बाद केंटर चालक मौके से फरार हो गया। थाना फेज 2 प्रभारी ने बताया कि योगेश शर्मा की शिकायत पर अज्ञात केंटर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उसकी तलाश की जा रही है।

थाना बीटा-2 में ग्राम नटो की मढैया निवासी पोपिन ने वेगनार कार चालक के (शेष पृष्ठ-4 पर)

प्रोन्नति के बाद जीएम (सिविल) एसपी सिंह को मिली नई तैनाती

यीडा के डीजीएम बने ग्रेनो में जीएम

नोएडा (चेतना मंच)। शासन ने नोएडा तथा यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण में दो उपमहाप्रबंधक को प्रोन्नत करके नई तैनाती भी कर दी है। शासन ने नोएडा प्राधिकरण में उप महाप्रबंधक (जनस्वास्थ्य व एनटीसी) का कार्य देख रहे एसपी सिंह को महाप्रबंधक (सिविल) के पद पर नोएडा प्राधिकरण में तैनाती दे दी है।

यह आदेश औद्योगिक विकास विभाग के प्रमुख सचिव अनिल कुमार सागर ने जारी किए हैं। उन्हें शासन ने 30 जुलाई 2024 को उप महाप्रबंधक से प्रोन्नत करके महाप्रबंधक (सिविल) बनाया गया था। अब उनकी नोएडा प्राधिकरण में नवीन तैनाती भी दे दी है। फ्लिहाल वे वर्तमान दायित्वों का ही निर्वहन करेंगे। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यीडा) में उप महाप्रबंधक (सिविल) के पद पर तैनात आशीष कुमार सिंह (शेष पृष्ठ-4 पर)

बाइक पर जा रहे दो भाइयों को कंटेनर ने कुचला

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना रबूपुरा क्षेत्र के यमुना एक्सप्रेसवे पर फलेदा कट के पास बाइक पर जा रहे दो भाइयों को तेज गति में आ रहे कंटेनर ने कुचल दिया। हादसे में दोनों भाइयों की दर्दनाक मौत हो गई। इस दुर्घटना में हुई दो भाइयों की मौत के बाद से उनके परिवार में कोहराम मचा हुआ है और गांव में शोक व्याप्त हो गया है। वहीं थाना फेस दो क्षेत्र में तेज गति में आ रहे टोला की चपेट में आने से दो चचेरे भाइयों की मौके पर ही मौत हो गई।

ग्राम औरंगपुर निवासी रामपाल व उनके भाई ब्रह्मपाल अपने घर से बाइक पर सवार होकर टप्पल में अपने खेतों पर जा रहे थे। उनकी बाइक जैसे ही यमुना एक्सप्रेस वे के फलेदा कट के पास पहुंची तो तेज गति में आ रहे कंटेनर का चालक नियंत्रण खो बैठा और उसने बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में

बाइक सवार रामपाल व ब्रह्मपाल गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों की सूचना पर दोनों को एंबुलेंस द्वारा जेवर स्थित कैलाश अस्पताल ले जाया गया, यहां चिकित्सकों ने ब्रह्मपाल को मृत घोषित कर दिया जबकि रामपाल की सांसे चल रही थी। इलाज के दौरान रामपाल ने भी दम तोड़ दिया। हादसे की सूचना मिलने पर मृतकों के परिजन भी अस्पताल पहुंच गए। इस संबंध में रामपाल के बेटे मोहित ने अज्ञात कंटेनर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने कंटेनर चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दोनों शवों का पोस्टमार्टम करा कर परिजनों के सुपुर्द कर दिया है। दो सगे भाइयों की हादसे में हुई दर्दनाक मौत से पूरे गांव में शोक व्याप्त है।

आगर बस्ती में रहने वाले अरमान और अनस बुधवार की शाम को ऑटो से उतरकर नंगला चौराहे से पैदल घर आ रहे थे नंगला चौराहे के पास पीछे से तेज गति में आ रहे ट्रॉला ने दोनों को कुचल दिया। गंभीर रूप से घायल अनस और अरमान ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। हादसे के बाद चालक ट्राला को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक हादसे के समय ट्राला की गति काफी तेज थी। चालक ट्राला से नियंत्रण खो बैठा था और उसने पैदल जा रहे दोनों युवकों को कुचल दिया। पुलिस के मुताबिक इस हादसे में मारे गए अनस और अरमान चचेरे भाई है।

बाइक, ई-रिक्शा व कार चोरी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। सूरजपुर स्थित जिला न्यायालय के बाहर से एक व्यक्ति की बाइक पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। इसके अलावा चोरों ने अलग-अलग स्थान से एक ई रिक्शा,बाइक व हुंडई आई 10 कार भी चोरी कर ली।

थाना सूरजपुर में दर्ज कराई रिपोर्ट में संगम विहार दिल्ली निवासी राकेश कुमार ने बताया कि वह किसी कार्य से सूरजपुर स्थित न्यायालय आया था। उसने अपनी बाइक न्यायालय के गेट नंबर 2 के सामने खड़ी कर दी और भीतर चला गया। कुछ समय बाद जब वह बाहर आया तो उसकी बाइक गायब थी। उसने इसकी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है। थाना सेक्टर-58 क्षेत्र के सेक्टर-62 स्थित एंथम टावर के बफेट रेस्टोरेंट में काम करने वाले सुशील बिष्ट ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उसकी बाईक रेस्टोरेंट के बाहर से चोरी हो गई। सुशील बिष्ट ने बताया कि 30 सितंबर को वह अपने घर से रेस्टोरेंट में ड्यूटी के लिए आया था। उसने अपनी बाइक एंथम टावर के बाहर खड़ी कर दी। शाम के समय जब वह ड्यूटी खत्म कर बाहर आया तो उसकी बाइक गायब थी। थाना सेक्टर 113 में सर्फाबाद गांव निवासी सुरेश सिंह ने अपना ई रिक्शा चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है। सुरेश सिंह ने बताया कि 26 सितंबर को उसने अपना ई-रिक्शा घर के बाहर खड़ा किया था। सुबह जब वह सो कर उठा तो उसका ई-रिक्शा गायब था। सिल्वर सिटी ग्रेटर नोएडा निवासी राम (शेष पृष्ठ-4 पर)

बाजार गई बहन वापस नहीं लौटी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना दनकौर क्षेत्र से एक नाबालिक किशोरी को एक युवक अगवा कर ले गया। किशोरी के भाई ने आरोपी युवक व उसके पिता के खिलाफ खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई है।

मोहल्ला प्रेमपुरी में रहने वाले सफीक (काल्पनिक नाम) ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि 20 सितंबर की शाम को उसकी (17 वर्षीय) बहन घर से बाजार के लिए गई थी। इसके बाद वह घर वापस नहीं लौटी। परिजनों ने जब छानबीन की तो पता चला कि पड़ोस में रहने वाला मोहित कुमार उसकी बहन को जबरन अगवा कर अपने साथ ले गया है। इस बात की जानकारी मिलने पर उन्होंने जब मोहित कुमार के पिता धीरज सिंह से अपनी बहन के बारे में पूछा तो उन्होंने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं

दिया। धीरज सिंह ने उन्हें आश्वासन दिया कि जल्द ही उसकी बहन को वह वापस उनके घर पहुंचा देंगे। 14 दिन बीतने के पश्चात भी उसकी बहन के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली है। सफीक ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि आरोपी मोहित कुमार व उसकी बहन के बारे में उसके पिता को तमाम जानकारी है। पीड़ित ने अपनी बहन के साथ कोई अनहोनी होने की आशंका भी जताई है। थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपी युवक व उसके पिता के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

युवती का अपहरण

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-24 क्षेत्र से एक युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। युवती के पिता ने एक युवक पर उसके अपहरण का शक जाहिर करते हुए मुकदमा दर्ज कराया है। नोएडा के चौड़ा गांव में किराए पर रहने वाले राकेश (काल्पनिक नाम) ने थाना सेक्टर-24 में दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि एक अक्टूबर की दोपहर को उसकी बेटी घर से कहीं चली गई। देर शाम तक उसके वापस घर न लौटने पर उसने अपनी बेटी की तलाश की लेकिन उसका कोई पता नहीं चला। राकेश ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बिहार के रहने वाले रिशु पुत्र दयानंद पर अपनी बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने का शक जाहिर किया है। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपी युवक व युवती की तलाश कर रही है।

ऑटो में बैठी सवारी का मोबाइल चोरी

नोएडा (चेतना मंच)। अगर आप ऑटो से सफर कर रहे हैं तो सावधानी बरते, ऐसा ना हो कि आपकी जेब में रखा मोबाइल व पर्स गायब हो जाए। ऐसा ही एक मामला सेक्टर-62 मेट्रो स्टेशन के पास आया है। यहां ऑटो में बैठे एक व्यक्ति की जेब से चोरों ने मोबाइल फोन चोरी कर लिया।

थाना सेक्टर-63 में दर्ज कराई रिपोर्ट में चोटपुर कॉलोनी निवासी आदित्य कुमार ने बताया कि वह 19 सितंबर की सुबह सेक्टर 62 स्थित मेट्रो स्टेशन के पास से एक ऑटो में बैठा था। कुछ देर बाद जब वह ऑटो से उतरा तो उसकी जेब से मोबाइल फोन गायब था। उसने अपने मोबाइल फोन की काफी तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

विद्युत उपकेंद्र के कर्मी से मारपीट

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। धूम मानिकपुर गांव स्थित विद्युत उपकेंद्र के भीतर जबरन हाइड्रा खड़ी करने का विरोध करने पर चालक ने उपकेंद्र के एसएसओ के साथ गाली गलौज व मारपीट की। पीड़ित ने आरोपी के खिलाफ थाना बादलपुर में मुकदमा दर्ज कराया है।

माया एनक्लेव चांदपुर रोड बुलंदशहर निवासी किरण पाल राणा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि वह पूर्व सैनिक कल्याण निगम के माध्यम से धूम मानिकपुर स्थित विद्युत उपकेंद्र पर एसएसओ के रूप में कार्यरत है। बीते 2 अक्टूबर को दादरी निवासी मोहित उर्फ मिचौली अपना हाइड्रा लेकर विद्युत उपकेंद्र पर आया। मोहित उसके द्वारा मना करने के बावजूद भी हाइड्रा को जबरदस्ती अंदर खड़ा करने लगा। उसने जब इस बात का विरोध किया तो उसने गाली गलौज करते हुए मारपीट की। किरण पाल राणा के मुताबिक मारपीट में उसे काफी चोटें आई। घटना के बाद आरोपी उसे जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गया। थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उसकी तलाश की जा रही है।

बाइक सवार की सड़क हादसे में मौत

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे पर एडवांट बिल्डिंग के सामने अज्ञात वाहन ने बाइक में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। उपचार के दौरान उसने अस्पताल में दम तोड़ दिया। मूल रूप से उत्तर प्रदेश के कुशीनगर निवासी बीरबल कुमार 23 सितंबर को अपनी बाइक से ग्रेटर नोएडा के परी चौक से दिल्ली की तरफ आ रहे थे। वह जैसे ही एडवांट बिल्डिंग के पास पहुंचे तो किसी अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक में टक्कर मार दी। इस हादसे में बीरबल कुमार शर्मा गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की जानकारी मिलने पर पुलिस ने उन्हें उपचार के लिए सेक्टर 39 स्थित जिला अस्पताल में भर्ती कराया। (शेष पृष्ठ-4 पर)

RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning ● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

अजनारा होम्स के पास सोने की चेन लूटी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बिसरख क्षेत्र के ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित अजनारा होम्स सोसाइटी के पास बाइक सवार दो बदमाशों ने एक महिला के गले से सोने की चेन और पेंडेंट लूट लिया। अगस्त माह में हुई लूट की इस घटना की रिपोर्ट पुलिस ने अब दर्ज की है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के अजनारा होम्स सोसाइटी में रहने वाले कुंदन कुमार ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उनकी माताजी 8 अगस्त की रात्रि को राधा स्काई गार्डन और फ्रेंच अपार्टमेंट के पास लगने वाले साप्ताहिक बृहस्पति (शेष पृष्ठ-4 पर)

सीईओ ने पुष्करणी तालाब का किया भूमि पूजन

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सीईओ डा. लोकेश एम ने सेक्टर-108 स्थित नक्षत्र वन पार्क में पुस्करणी तालाब का भूमि पूजन किया। उन्होंने इस अवसर पर पार्क में अशोक के पौधे का रोपण भी किया। यह नक्षत्र वन तथा पुष्करणी तालाब पर्यावरण की दृष्टि से काफी लाभदायी साबित होगा। (शेष पृष्ठ-4 पर)

बुलडोजरी न्याय

शीर्ष अदालत ने एक उस विवादास्पद मुद्दे पर स्पष्ट राय देश के सामने रखी है जिसकी तार्किकता को लेकर पिछले कई वर्षों से बार-बार सवाल उठ रहे थे। यानी कुछ राज्य सरकारों के बुलडोजरी न्याय को लेकर। खासकर भाजपा शासित राज्यों में गंभीर अपराधों व अनधिकृत कब्जों के खिलाफ पीला पंजा चलता देखा गया। जाहिरा तौर पर इस तरह की कार्रवाई न्याय की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है। सवाल यह भी है कि जब तक किसी व्यक्ति पर सिर्फ आरोप ही लगे हैं, तो उसका घर कैसे गिराया जा सकता है? इस विवादास्पद कार्यशैली को लेकर दाखिल याचिकाओं की सुनवायी के दौरान देश की शीर्ष अदालत ने तल्ख टिप्पणियां की हैं। अदालत का मानना था कि भले ही कोई व्यक्ति किसी संगीन मामले में दोषी हो तो भी बिना न्यायिक प्रक्रिया पूरी किए ऐसी कार्रवाई नहीं की जा सकती है। लेकिन साथ ही अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि इसके मायने अवैध निर्माण को संरक्षण देना कदापि नहीं है। दरअसल, इस मामले में केंद्र व राज्य सरकारों की तरफ से दलील दी जाती रही है कि जिन मामलों में यह कार्रवाई की गई वे गैरकानूनी कब्जे कर किए गए अनधिकृत निर्माण थे। निस्संदेह, ये दलीलें मामले में जरूरी प्रक्रिया को न अपनाये जाने के चलते न्याय के अनुरूप नहीं ठहराई जा सकती हैं। दरअसल, हाल के वर्षों में कई बार देखने में आया कि कुख्यात अपराधियों,हत्यारों व बलात्कारियों के घर जमींदोज कर दिए गए। सतही तौर पर कहा जाता रहा है कि ऐसे अपराधियों में शासन-प्रशासन का भय होना चाहिए। लेकिन इस कार्रवाई को व्यापक अर्थों में देखें तो यह न तो कानून की कसौटी पर खरा उतरती है और ना ही इसे मानवीय दृष्टि से सही कहा जा सकता है। यही वजह है कि गाहे-बगाहे राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक संगठनों द्वारा ऐसी कार्रवाई को लेकर सवाल उठाये जाते रहे हैं। निश्चय ही किसी सभ्य समाज में ऐसे सवालों का उठना लाजिमी है। सर्वोच्च न्यायालय के उस तर्क से सहमत हुआ जा सकता है जिसमें कहा गया था कि किसी मामले में आरोप लगने के बाद ऐसी कार्रवाई कानून सम्मत नहीं है। लेकिन ऐसी कार्रवाई तब भी नहीं की जानी चाहिए जब उसका अपराध साबित हो गया हो। निस्संदेह, घर एक पारिवारिक इकाई का नाम है। एक घर को बनाने में एक व्यक्ति की पूरी उम्र लग जाती है। फिर परिवार के तमाम सदस्यों का भी तो वह घर होता है। उनको अपराधी या आरोपी व्यक्ति के कृत्यों के चलते बेघर तो नहीं ही किया जा सकता। यह न केवल कानून के विरुद्ध है बल्कि अमानवीय कदम भी है। जिनका किसी अपराध से लेना-देना न हो, उन्हें दंडित करना अन्याय ही तो है। फिर यदि किसी व्यक्ति के घर पर आरोपों के चलते बुलडोजर चला दिया गया हो और वही व्यक्ति कालांतर आरोपमुक्त हो जाए, तो ध्वस्त घर बनाने की जिम्मेदारी किसकी होगी? शासन-प्रशासन के अधिकारियों को अपने राजनीतिक आकाओं को खुश करने के बजाय विवेक व न्यायसंगत तरीके से कोई निर्णय लेना चाहिए। निस्संदेह, अतिक्रमण का संकट देशव्यापी है, जिसे धर्म-जाति से परे कानून की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। बल्कि तमाम तरह के अतिक्रमणों को बढ़ावा देने में राजनेताओं की बड़ी भूमिका होती है। कालांतर वोट बैंक बनाने के लिये वे इन अवैध निर्माणों को वैध बनाने की कोशिश में जुट जाते हैं। बहरहाल, देश में अतिक्रमण हटाने और बुलडोजर के इस्तेमाल को लेकर देशव्यापी दिशा-निर्देश तय होने चाहिए। जिससे राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थों के लिये इस कार्रवाई को तार्किक ठहराने की कोशिश न कर सकें। साथ ही अवैध निर्माण गिराने की प्रक्रिया सबके लिये एक समान होनी चाहिए। वैसे तो अवैध निर्माण हटाने की प्रक्रिया निरंतर सालभर चलने वाली प्रक्रिया है, इसका चुनाव या लक्षित समय में उपयोग करना गलत होगा। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे पर सभी हितधारकों से सुझाव मांगे हैं ताकि पूरे देश में बुलडोजर के इस्तेमाल के बाबत तार्किक व एकरूपता वाले दिशा-निर्देश राज्य सरकारों को दिए जा सकें। सवाल अधिकारियों का अपनी विश्वसनीयता कायम करने का भी है।

श्रद्धा एवं आस्था का प्रतीक है नवरात्रि पर्व

भारत की भूमि उत्सव एवं मेलों की प्रतीक है। यहां पर प्रत्येक दिवस का अपना महत्व है। भारत की देव दर्शन संस्कृति विश्व भर में प्रचलित है। इसी परंपरा की श्रृंखला में नवरात्रि पर्व भी सम्मिलित है। नवरात्रि का अर्थ है नौ रातों का समय, जिसमें शक्ति की पूजा की जाती है। भारतीय सनातन धर्म परंपरा में एक वर्ष में चार बार नवरात्रि पर्व होता है जो चैत्र, आषाढ़, आश्विन एवं माघ मास शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होते हैं। आषाढ़ एवं माघ गुप्त नवरात्रि पर्व हैं जिनका विधान योगियों से संबंधित है। चैत्र एवं आश्विन नवरात्रि का विधान गृहस्थ जीवन में रहने वाले साधकों के लिए है। चैत्र एवं शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्व एवं प्राचीन इतिहास है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हिंदू नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। शारदीय नवरात्रि आश्विन शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से आरंभ होते हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में नवरात्रों में पूजन की क्षेत्रीय विधियां भी हैं जो वहां की संस्कृति की प्रतीक हैं। गुजरात में गरबा नृत्य करके देवी को प्रसन्न किया जाता है। बंगाल में दुर्गा पूजा का महापर्व हर्षोल्लास से मनाया जाता है। उत्तर भारत में नवरात्रि महोत्सव की धूम निराली ही होती है। हिमाचल प्रदेश में इस पर्व की तैयारियों में शक्तिपीठ सजाए जाते हैं। देश के विभिन्न कोने से भक्त मां ज्वालादेवी, श्री नयना देवी, चिंतपूर्णी, वज्रेश्वरीदेवी, चामुण्डा देवी एवं कटड़ा में मां वैष्णो देवी के दर्शन के लिए लम्बी कतारें लगती हैं। चातुर्मास में जो धार्मिक एवं शुभ कार्य धार्मिक दृष्टिकोण से रोक दिए जाते हैं, वे नवरात्रि में शुरू हो जाते हैं। नवरात्रि का इतिहास वैदिक काल से भी पूर्व के समय से जुड़ा हुआ है। इस वर्ष हिंदू पंचांग के अनुसार 2081 शारदीय नवरात्रि पर्व आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तिथि 3 अक्तूबर से आरंभ हो रहे हैं। नवरात्रि पर्व में मां दुर्गा के नौ अवतारों की पूजा की जाती है।

पूजन विधि = भगवती मां दुर्गा अपने नौ अवतारों में साधकों एवं भक्तों के संकल्प को पूरा करती हैं। जिस भावना से भक्त अपनी देवी की उपासना करता है, विधि-विधान से दुर्गा स्तुति, दुर्गा सप्तशती पाठ एवं आरती करता है, मां उसी भावना के साथ उसके मनोरथ पूर्ण करती है। प्रत्येक एक दिन देवी के प्रत्येक अवतार का प्रतीक है। प्रथम नवरात्रि 3 अक्तूबर प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्नान करके सर्वप्रथम गणेश स्तुति करने के बाद कलश स्थापना करें। इसके साथ जौं बोने की विधि को भी सम्पन्न करें। जौं को शास्त्रों में प्रथम फसल स्वीकार किया गया है। हवन सामग्री में भी जौं की आहुति अग्नि देवी को दी जाती है। जौं बीजना समृद्धि एवं प्रगति के सूचक हैं। इसके बाद आप देवी मां का स्मरण करते हुए संकल्प लें कि 'हे मां! हम आपकी शरणागत हैं और आप हमारी यह पूजन विधि सफल करना। आपके आशीर्वाद से ही यह कार्य सफल होगा। प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करने के पश्चात पुष्प, लाल सिंदूर, लौंग, इलायची, फल आदि अर्पित करें। आप अपनी सुविधानुसार गाय के घी का दीपक सुबह-शाम कर सकते हैं। यदि आपके पास समय एवं सामर्थ्य है तो आप नौ दिन उपवास एवं अखंड ज्योति भी प्रज्वलित करके भगवती मां को प्रसन्न कर सकते हैं। प्रथम नवरात्रि से नवम नवरात्रि तक मां के नौ अवतारों की पूजा विधि-विधान से की जाती है। नवरात्रि के नौवें दिन नौ कन्याओं को श्रद्धा एवं प्रेम के साथ घर पर आमंत्रित करके हलवा-पूड़ी, सब्जी, फल एवं चने आदि सात्विक आहार का भोग लगाया जाता है और सामर्थ्य के अनुसार उपहार एवं दक्षिणा दी जाती है। देवी का पूजन कुछ क्षेत्रीय मान्यताओं पर भी आधारित है।

कई स्थानों पर भक्त महा अष्टमी को यह कार्यक्रम करते हैं। कुछ भक्त रामचरितमानस का पाठ भी करते हैं। शारदीय नवरात्रि में प्रभु श्रीराम रामेश्वरम धाम में समुद्र तट पर भगवती मां के नौ स्वरूपों की आराधना करते हैं और चार वेदों के ज्ञाता सभी ग्रहों को अपने वश में करने वाले महान विद्वान लंकापति राजा रावण को पराजित करने का वरदान प्राप्त करते हैं। नवरात्रि के दसवें दिन राम-रावण का समर असत्य पर सत्य, छल पर विश्वास एवं अहंकार पर परोपकार की विजय के साथ समाप्त होता है जिसे हम विजयदशमी या दशहरा के रूप में उत्सव मनाते हैं। मां के नौ स्वरूप हैं = शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धीदात्री। शैलपुत्री = शैल का शाब्दिक अर्थ चट्टान है। शैलपुत्री का अर्थ पहाड़ की बेटी है। मां पार्वती का पुनर्जन्म है। यह पहली नवदुर्गा का स्वरूप है। मां शैलपुत्री अरुणोदय में प्रकट हुई और सूर्यप्रभा से इनका रंग नारंगी हो गया। इनकी सवारी बैल है। पहले नवरात्रि को इस मंत्र का जाप अवश्य करें = 'या देवी सर्वभूतेषु मां शैलपुत्री रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।' ब्रह्मचारिणी = ब्रह्म का अर्थ है तप। ब्रह्मचारिणी का अर्थ है तप का आचरण करने वाली एक समर्पित देवी। मां का यह स्वरूप अंतर्मन की ऊर्जा को

जागृत करने का प्रतीक है। मां पार्वती शिव को पति रूप में पाने के लिए वाम हस्त में कमंडल तथा दाहिनी हाथ में माल लेकर तप करने के लिए जाती हैं। उनके इसी स्वरूप को ब्रह्मचारिणी कहा जाता है। इस दिन आप ऐसी कुंवारी लडकी जिसका विवाह तय हो गया हो, लेकिन विवाह अभी होना हो, उसे शाम को देवी स्वरूप में बुलाकर श्रद्धा भाव से भोजन करवा कर उपहार दे सकते हैं। दूसरे नवरात्रि को इस मंत्र का जाप अवश्य करें = 'या देवी सर्वभूतेषु मां ब्रह्मचारिणी रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।' चंद्रघंटा = तीसरा नवरात्रि मां चंद्रघंटा को समर्पित है। शिव के साथ विवाह के पश्चात मां पार्वती ने चंद्रमा को अपने मस्तक पर सुशोभित किया, जिससे मां का यह स्वरूप विकसित हुआ। स्वर्ण से आभामय मां का 10 भुजाओं वाला स्वरूप है। अस्त्र-शस्त्र धारण करके मां सिंह की सवारी करती हैं। देवी के इस स्वरूप के पूजन से भक्तों को आरोग्य, सुख-संपदा की प्राप्ति होती है। शाम को आरती के बाद देवी को दूध से बने हुए मिष्ठान का भोग लगाकर प्रसाद को भक्तों में बांट दें। तीसरे नवरात्रि को इस मंत्र का जाप अवश्य करें = 'या देवी सर्वभूतेषु मां चंद्रघंटा रूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।'

कूष्मांडा = चौथा नवरात्रि मां कूष्मांडा को समर्पित है। देवी कुष्मांडा अष्ट भुजाओं वाली, दिव्य मुस्कान की स्वामिनी हैं। देवी ने अपनी अष्ट भुजाओं में कमंडल, कमल, कलश, सुदर्शन चक्र, धनुष, गदा बाण एवं सर्वसिद्धि माला को धारण किया है। जो साधक सच्चे मन से इनकी शरण में चला जाए, देवी उसकी हर समस्या का निदान करती हैं। कूष्मांडा देवी को कुम्हड़ा (कद्दू या पेठे) की बलि से प्रसन्न किया जाता है। देवी को लाल वस्त्र, नैवेद्य एवं श्रृंगार सामग्री भी अति प्रिय है। देवी के आशीर्वाद से भक्तों को यश की प्राप्ति होती है और दीर्घायु जीवन प्राप्त होता है। स्कंदमाता = पांचवां नवरात्रि मां स्कंदमाता को समर्पित है। देवी का यह स्वरूप अपने भक्तों की समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है। मां की चार भुजाएं हैं। इनका वाहन शेर है। देवी के इस स्वरूप की पूजा करने से भक्तों के कष्ट कम होते हैं तथा इस भवसागर से मुक्ति पाकर मोक्ष का मार्ग सरल होता है। कात्यायनी = भगवती दुर्गा के छठे स्वरूप को कात्यायनी देवी कहा जाता है । देवी का यह स्वरूप चतुर्भुजी है। देवी अपने भक्तों को भय से मुक्ति प्रदान करती हैं और भक्ति का वरदान देती हैं। देवी के स्वरूप की पूजा से विवाह में आने वाले विघ्न समाप्त होते हैं और विवाह के योग बनते हैं। कालरात्रि = देवी का सातवां स्वरूप कालरात्रि का प्रतीक है। देवी कालरात्रि भक्तों के शत्रुओं का नाश करती हैं। महागौरी = देवी का आठवां स्वरूप महागौरी का है। देवी शुचिता, करुणा, सौम्यता के लिए जानी जाती हैं। सिद्धिदात्री = नवां रूप, सिद्धि का अर्थ है अलौकिक शक्ति और दात्री का आशय है देने वाली।

-संतोष कुमारी गर्ग. शोधार्थी

सेहत पर भारी मिलावटी खाद्य सामग्री

भारत में बढ़ती आबादी के कारण और मांग एवं आपूर्ति में अंतर के चलते प्रायः खाद्य वस्तुओं की किल्लत और दामों में बढ़ोत्तरी होती ही रहती है और इसी किल्लत का फायदा जमाखोरों की टोलियां उठाने से नहीं चूकती हैं, तो वहीं घटिया एवं मिलावटी चीजें बेचने वालों की पौबारह हो जाती है। भारत में इन दोनों तिरुमला तिरुपति देवस्थानम द्वारा श्रद्धालुओं को दिए जाने वाले लड्डुओं को मिलावटी देसी घी से बनाने से भक्तों की धार्मिक आस्था आहत होने का मुद्दा भी चर्चा में है। देवस्थानम को देसी घी की आपूर्तिकर्ता कंपनी एआर डेयरी फूड प्राइवेट लिमिटेड से खाद्य नियामक ने पूछा है कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक विनियमन 2011 के प्रावधानों के उल्लंघन के लिए उसका केंद्रीय लाइसेंस निलंबित क्यों न कर दिया जाए? आज भारत में मिलावट का कारोबार उस स्तर को पार कर चुका है जहां खाद्य उत्पादों में सस्ते और घटिया पदार्थ मिलाकर बेईमान व्यापारी व विक्रेता सामान की मात्रा को बढ़ा देते हैं और भारतीयों की जान की कीमत पर भारी मुनाफा कमाते हैं। ऐसा अनुमान है कि 60 करोड़ लोग अर्थात विश्व में लगभग 10 में से 1 व्यक्ति हर वर्ष दूषित भोजन खाने के कारण बीमार पड़ते हैं तथा 420000 लोग मर भी जाते हैं।

भारत में दूध और डेयरी उत्पाद, वसा और तेल, फल और सब्जियां, अनाज, कॉफी, चाय, शहद और मसाले आदि सहित लगभग हर खाद्य सामग्री में मिलावट का प्रतिशत अत्यधिक बढ़ गया है और स्वच्छता मानकों की बुरी तरह से अनदेखी हो रही है। इतना ही नहीं, भारत के कई क्षेत्रों से ऐसे भी वीडियो की सोशल मीडिया में भरमार हो रखी है जिसमें समोसे, चाट, ब्रेड, कुल्फी, प्लास्टिक के चावल और गुलाब जामुन से भरी कड़ाही में पेशाब करते युवक और गोल गप्पे वाले जलजीरा पानी से ही हाथ मुंह धोने, गंदे हाथ पैरों से आलू और आटा गूंथने जैसे कृत्यों द्वारा गंदगी से परिपूर्ण खाद्य सामग्री आम लोगों को परोसी जा रही है। ऐसे कृत्य न केवल निंदनीय हैं अपितु दोषी लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग भी करते हैं। सवाल उठता है कि आखिर ऐसी गतिविधियों में संलिप्त लोगों को तत्काल जेल की सलाखों के पीछे क्यों नहीं डाला जाता है? विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हानिकारक बैक्टीरिया, वायरस, परजीवी या रासायनिक पदार्थों से युक्त असुरक्षित भोजन 200 से अधिक बीमारियों का कारण बनता है जिसमें डायरिया से लेकर कैंसर तक शामिल हैं। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में असुरक्षित भोजन के कारण चिकित्सा व्यय में हर साल 110 बिलियन अमेरिकी डॉलर का नुकसान होता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के महानिदेशक डा. कू डोंग्यू के अनुसार, 'हमें अपने भोजन की पहचान, गुणवत्ता और सुरक्षा पर एक आम समझ की जरूरत है। लेकिन भारत में दूध में पानी मिलाने, नकली दूध, घी में केमिकल, दाल में सिंथेटिक रंग और वैक्स कोटिंग, सब्जियों में हॉर्मोन के इंजेक्शन तथा सिंथेटिक रंग, हर्बल उत्पादों में एलोपैथिक दवाइयां तथा केमिकल्स,

खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पडक़र स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें। अतिरिक्त सतर्कता का पालन करने से ही हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बना सकते हैं।

सौंदर्य प्रसाधनों में और देसी घी बनाने में पशुओं की चर्बी होने की जानकारी किसी से छुपी हुई नहीं है। खाद्य अपमिश्रण से आखों की रोशनी जाना, हृदय संबंधित रोग, लीवर खराब होना, कुष्ठ रोग, आहार तंत्र के रोग, पक्षाघात व कैंसर जैसे असाध्य रोग हो सकते हैं। हिमाचल प्रदेश में मिलावटी खाद्य पदार्थों की समस्या से निपटने के लिए राज्य सरकार कुछ उपायों पर काम करती दिख रही है। राज्य में फूड फोरेंसिक यूनिट स्थापित करने की मंजूरी मिल चुकी है।

यह यूनिट गुजरात के बाद देश की दूसरी फूड फोरेंसिक यूनिट होगी। यह यूनिट खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और संदिग्ध खाद्य मामलों की जांच करेगी। इस यूनिट से खाद्य पदार्थों में कीटनाशकों, रासायनिक शर्करा और स्टीरॉइड की मात्रा का पता लगाया जा सकेगा। राज्य सरकार को मिलावटी और बासी खाद्य पदार्थों से निपटने के लिए केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय से 37 लाख रुपे की मोबाइल फूड सेफ्टी वैन भी मिली है। खाद्य अपमिश्रण के परीक्षण के लिए मैसूर, पुणे, गाजियाबाद एवं कोलकाता में भारत सरकार द्वारा चार केन्द्रीय प्रयोगशालाएं व्यवस्थित रूप से स्थापित की गई हैं। खाद्य अपमिश्रण एवं रेहड़ी फड़ी वालों द्वारा लोगों को गंदा और घटिया खाने-पीने की वस्तुएं बेचने से आगाह करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार द्वारा 'ईट राइट इंडिया मूवमेंट' की पहल की गई है, जिसका उद्देश्य भारत में स्वस्थ खाने की आदतों और खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देना है। भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने 'ईट राइट इंडिया' अभियान के माध्यम से सभी भारतीयों के लिए सुरक्षित, स्वस्थ और पोषक भोजन सुनिश्चित करने के लिए देश की खाद्य प्रणाली को बदलने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास शुरू किया है। इस प्रकार, 'सही भोजन बेहतर जीवन' टैगलाइन इस आंदोलन की नींव बनाती है।

ईट राइट मूवमेंट अभियान तीन प्रमुख विषयों पर आधारित है- सुरक्षित खाएं, व्यक्तिगत और आसपास की स्वच्छता सुनिश्चित करें, स्वस्थ खाएं, आहार विविधता और संतुलित आहार को बढ़ावा दें एवं स्थानीय और मौसमी सब्जियों/भोजन को बढ़ावा दें, भोजन के नुकसान को रोकें। खाने-पीने के शौकीन अथवा महानगरों में नौकरी आदि के चलते कम मूल्य लागत वाला भोजन तलाशने वाले भारतीयों के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि स्वाद एवं सस्ते के चक्कर में न पडक़र स्वच्छता मानकों एवं साफ-सफाई को अपनी सेहत के दृष्टिगत स्वच्छ एवं पौष्टिक भोजन को अपनी प्राथमिकता में रखें। केवल अतिरिक्त सतर्कता और जागरूकता का पालन करने से ही हम अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपमिश्रित एवं गंदी खाद्य सामग्री बेचने वालों के कुत्सित इरादों को परास्त कर सकते हैं।

-अनुज आचार्य, स्वतंत्र लेखक

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि सतीजी ने हृदय में अनुमान किया कि सर्वज्ञ शिवजी सब जान गए। मैंने शिवजी से कपट किया, स्त्री स्वभाव से ही मूर्ख और बेसमझ होती है॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।
बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि॥

प्रीति की सुंदर रीति देखिए कि जल भी (दूध के साथ मिलकर) दूध के समान भाव बिकता है, परन्तु फिर कपट रूपी खटाई पड़ते ही पानी अलग हो जाता है (दूध फट जाता है) और स्वाद (प्रेम) जाता रहता है॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी। चिंता अमित जाइ नहिं बरनी॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा॥

अपनी करनी को याद करके सतीजी के हृदय में इतना सोच है और इतनी अपार चिन्ता है कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। (उन्होंने समझ लिया कि) शिवजी कृपा के परम अथाह सागर हैं। इससे प्रकट में उन्होंने मेरा अपराध नहीं कहा॥

संकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी॥
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई। तपइ अवाँ इव उर अधिकाई॥

शिवजी का रुख देखकर सतीजी ने जान लिया कि स्वामी ने मेरा त्याग कर दिया और वे हृदय में व्याकुल हो उठीं। अपना पाप समझकर कुछ कहते नहीं बनता, परन्तु हृदय (भीतर ही भीतर) कुम्हार के आँवे के समान अत्यन्त जलने लगा॥

(क्रमशः..)

राशिफल

आश्विन शुक्ल पक्ष : द्वितीया | **(विक्रम संवत् 2081)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
जीवनसाथी के साथ आनंददायक जीवन गुजारेंगे। नौकरी-चाकरी की स्थिति बहुत अच्छी है स्वास्थ्य में सुधार।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
शत्रु भी मित्रवत व्यवहार करेंगे। स्वास्थ्य थोड़ा नरम-गरम। प्रेम संतान बहुत अच्छा। बहुत अच्छा।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
लिखने-पढ़ने में समय व्यतीत करें। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
भूमि, भवन वाहन की खरीदारी की प्रबल योग बन रहा है। स्वास्थ्य बहुत अच्छा, प्रेम, संतान की अभी मध्यम है।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
पराक्रम रंग लाएगा। रोजी-रोजगार में तरक्की करेंगे। स्वास्थ्य में सुधार। प्रेम, संतान का साथ।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
धन का आवक बढ़ेगा। कुटुंबों में वृद्धि होगी। आपको शब्दों से अमृत टपकेंगे।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
आकर्षण के केंद्र बने रहेंगे। जो चाहेंगे, वैसा होगा। स्वास्थ्य, प्रेम व व्यापार बहुत अच्छा।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
फैशन इत्यादि में खर्च की अधिकता रहेगी। कर्ज की स्थिति आ सकती है। स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ठा, भे)
आय के नवीन सोर्स बनेंगे। यात्रा का योग बनेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। स्वास्थ्य, प्रेम व व्यापार बहुत अच्छा।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
व्यापारिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। पिता का साथ होगा। स्वास्थ्य अच्छा, प्रेम-संतान अच्छा।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, द)
भाग्य साथ देगा। यात्रा का योग बनेगा। धर्म-कर्म में हिस्सा लेंगे। स्वास्थ्य, प्रेम, व्यापार बहुत अच्छा।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
चोट-चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं। स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

कुलीपुरा में हुआ विकास कार्यों का शुभारंभ

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। कल नवरात्र के प्रथम दिन ग्राम कुलीपुरा में भाजपा नेता मोहित भाटी की बेटी कुमारी प्रेषा भाटी ने विकास की धार को तेज करने के लिए जेवर के विधायक ठाकुर धीरेंद्र सिंह पहुंचे थे।उन्होंने भाजपा नेता की बिटिया प्रेषा भाटी को अपने गोदी में उठाकर विकास कार्यों का शुभारंभ करवाया। इस अवसर पर मौजूद लोगों ने तालिया से प्रेषा भाटी का जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम में पहुंचे लोगों को संबोधित करते हुए विधायक धीरेंद्र सिंह ने कहा कि गांव में सर्वांगीण विकास हो इसके लिए प्रदेश एवं केंद्र की सरकार कृत संकल्पित है। उन्होंने कहा कि गांव कुलीपुरा के विकास के लिए एक करोड़ 31 लाख रुपए की धनराशि स्वीकृत की गई है।

इस अवसर पर भाजपा नेता एक करोड़ 31 लाख रुपए के विकास कार्यों का फीता काटकर शुभारंभ किया।

बता दें कि कल कुलीपुरा गांव में मोहित भाटी हिंदू युवा वाहिनी के पूर्व जिला अध्यक्ष चैनपाल प्रधान सहित क्षेत्र के तमाम गणमान्य लोग मौजूद रहे।

अग्रसेन जयंती पर मेधावी छात्राओं का सम्मान

नोएडा (चेतना मंच)। अग्रवाल मित्र मंडल द्वारा महाराजा अग्रसेन जयंती अग्रवाल मित्र मंडल सेक्टर-33 नोएडा में मनाई गई। जिसमें हवन और मेधावी छात्राओं का सम्मान भंडारे वितरण एवं नि:शुल्क फिजियोथैरेपी कैंप का आयोजन किया गया। अग्रसेन जयंती महोत्सव के दौरान 6 अक्टूबर तक विभिन्न कार्यक्रम होंगे।

अग्रवाल मित्र मंडल के अध्यक्ष मुकेश गुप्ता ने बताया कि महाराजा अग्रसेन जयंती पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। समारोह में समाज के लोग बड़ी संख्या में शामिल हुए। उन्होंने बताया कि आज कार्यक्रम स्थल-शेवरॉन बैंक्वेट हॉल, सेक्टर-51 नोएडा में माता की चौकी शाम को होगी।

5 अक्तूबर को कार्यक्रम स्थल-महाराजा अग्रसेन भवन में रक्तदान शिविर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक व नि:शुल्क नेत्र जांच शिविर सुबह 10 बजे से शाम 2 बजे तक होगा।6 अक्टूबर को महाराजा अग्रसेन भवन में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच व नेत्र जांच शिविर होगा।

इस अवसर पर अग्रवाल मित्र मंडल के अध्यक्ष मुकेश गुप्ता, महासचिव मनोज गोयल, कोषाध्यक्ष पुनीत गर्ग, संयोजक राधेश्याम गोयल, सह संयोजक सुरेंद्र गर्ग, राजेंद्र जैन, संजय गोयल, बलराज गोयल, संदीप अग्रवाल, श्रीकांत बंसल, मोहनलाल गुप्ता,अशोक गोयल, सुनील गुप्ता, एडवोकेट विकास बंसल, विपिन अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल, भूपेंद्र मित्तल, सुशील सिंघल, कुलदीप गुप्ता, अनुज गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल, लघु अग्रवाल, आर.के गोयल, मूलचंद गुप्ता, रोहतास गोयल, अनिल गुप्ता, दशरथ बंसल, सीए मनोज अग्रवाल, अमीश राजवंशी, आकाशदीप गुप्ता, पंकज अग्रवाल, देवेंद्र गंगल, केशव गंगल, सौरभ अग्रवाल, मनोज बृजवासी, विकास जैन, मनोज गोयल, राजेश जिंदल, गिरीश कुमार, कृष्ण स्वरूप गोयल, मनीष गोयल, एडवोकेट अंकित जैन, तुषार गोयल, संदीप अग्रवाल, लवीश गर्ग, श्री भगवान अग्रवाल, विजय गुप्ता अन्य लोग उपस्थित रहे।

नुक्कड़ नाटक का आयोजन

नोएडा (चेतना मंच)। डब्ल्यूएफटीयू की 79वीं स्थापना वर्षगांठ पर अंतरराष्ट्रीय कार्रवाई दिवस के तहत एवं मजदूरों के कई मुद्दों/ मांगों को लेकर 5 अक्टूबर को प्रात: 11 बजे होने वाले जिलाधिकारी कार्यालय सूरजपुर ग्रेटर नोएडा पर होने वाले प्रदर्शन की तैयारी के लिए चल रहे अभियान के तहत सीटू जिला कमेटी गौतम बुध नगर के कार्यकर्ताओं ने गांव बरौला सेक्टर-49, नोएडा व सूरजपुर ग्रेटर नोएडा पार्क में नुक्कड़ नाटक व आमसभा का आयोजन किया।

दिल्ली जन नाट्य मंच के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नाटक और सभा के माध्यम से सीटू नेताओं ने मजदूरों के मुद्दों/ मांगों को रेखांकित करते हुए 5 अक्टूबर 2024 को डीएम कार्यालय सूरजपुर ग्रेटर नोएडा पर होने वाले प्रदर्शन में मजदूरों से बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की।

सीटू के जिलाध्यक्ष गंगेश्वर दत्त शर्मा ने बताया कि आज पूरे विश्व में ट्रेंड यूनियनों के कार्यकर्ता डब्ल्यूएफटीयू की 79वीं स्थापना वर्षगांठ मना रहे हैं। इस अवसर पर विरोध कार्रवाइयों के माध्यम से हम सम्मानजनक कार्य एवं जीवन स्थितियों की मांग करते हैं। साथ ही वेतन कटौती के बिना प्रतिमा 35 घंटे काम, सभी कार्य स्थलों पर सुरक्षा की गारंटी, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा की सार्वभौमीकरण, गुणवत्तापूर्ण कार्य और रहने का वातावरण आदि मांगों को उठाया गया है।

सीटू के जिला महासचिव रामसागर ने बताया कि 5 अक्टूबर 2024 को होने वाले प्रदर्शन की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। उक्त प्रदर्शन को सीटू के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व सांसद कामरेड तपन सेन, सीटू दिल्ली एनसीआर राज्य महासचिव कामरेड अनुराग सक्सेना सहित कई नेता संबोधित करेंगे।

श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर

रामलीला देख श्रोता हुए भावविभोर

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। श्री आदर्श रामलीला कमेटी सूरजपुर की रामलीला मंचन आरती की शुरुवात हुई और आज रावण द्वारा शिव की तपस्या रावण का चंद्रहास प्राप्त करने के प्रस्तुति एवं ब्रह्म जी के द्वारा वरदान ,रावण वेदवती संवाद ,मात पिता भक्त श्रवण कुमार के द्वारा माता पिता को तीर्थयात्रा का मंचन रामलीला में आये कलाकारों के ज़रिये बढ़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुतिकरण किया गया।

दर्शकों ने बड़े ही भाव विभोर होकर कलाकारों की कलाकारी को सराहा रामलीला मैदान बराही मंदिर पर आयोजित श्री आदर्श रामलीला अध्यक्ष सतवीर भाटी जी ने की बैठक का संचालन महामंत्रीरामलीला मंचन कार्यक्रम 2 अक्टूबर 2024 से रामलीला प्रारंभ होकर 13 अक्टूबर को दशहरा महोत्सव विजय महोत्सव 2024 तक चलेगा रामलीला मंचन की तैयारिया पूरी ही चुकी है श्री आदर्श रामलीला कमेटी महामंत्री सत्यपाल शर्मा ने बताया कि बच्चों के लिये मेले में झूला झूलने से लेकर खाने के लिए स्वादिष्ट व्यंजन और भक्तों की ख़रीदारी के लिए घरेलू सामनों के स्टालों की व्यवस्था और आये हुए मेले रामलीला मंचन देखने के लिये दूर दराज से आये लोगों को कार पार्किंग व्यवस्था के साथ लोगो के लिये सुरक्षा व्यवस्था पुलिस प्रशासन और श्री आदर्श रामलीला के पदाधिकारी कार्यकर्ता मुख्य रूप से संभालेंगे।

अवसर पर सत्यवीर भाटी डॉक्टर धनीराम देवधर भूदेव शर्मा मूलचंद शर्मा सत्यपाल शर्मा सुभाष शर्मा ओमवीर बैसला अनिल भाटी लक्ष्मण सिंघल मीडिया प्रभारी कर्मवीर आर्य विशाल गोयल सुभाष गुप्ता यशपाल चौहान भगत सिंह आर्य राजेश ठेकेदार विनोद पंडित विकास वर्मा मोहित शर्मा अशोक शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

कारोबारी के घर चोरी का खुलासा ड्राईवर व नौकरानी गिरफ्तार

नोएडा (चेतना मंच)। थाना फेस-1 पुलिस ने बीते दिनों सेक्टर-14 में रहने वाले एक कारोबारी के घर में हुई चोरी का खुलासा करते हुए ड्राइवर व घरेलू सहायिका को गिरफ्तार किया है। इनके पास से घर से चोरी किए गए 7 लाख रुपए बरामद हुए हैं।

डीसीपी नोएडा रामबदन सिंह ने बताया कि 26 सितंबर की रात्रि को सेक्टर 14 के बी ब्लॉक में रहने वाले कारोबारी करण गर्ग के मकान में चोरी की घटना हुई थी। घटना के समय करण गर्ग बाहर गए हुए थे और घर पर उनके बुजुर्ग माता-पिता थे। चोर घर से 7 लाख रुपए चोरी कर ले गए थे। थाना फेस 1 पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज कर जांच पड़ताल की तो उसे अहम सुराग हाथ लगे। प्रारंभिक जांच में पता चला की चोरी की इस घटना में कोई जानकार शामिल है। मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस ने रवि खान पुत्र आजाद खान निवासी ग्राम रिठौरा कला जनपद मुरैना मध्य प्रदेश व शालिनी उर्फ शालू पुत्री कल्लू निवासी हरदोई को हिरासत में लिया। कड़ी पूछताछ के बाद दोनों ने घर में चोरी की घटना को अंजाम देना स्वीकार किया। इनकी निशानदेही पर घर से चोरी किए गए 7 लाख रुपए भी बरामद किए गए। डीसीपी ने बताया कि पकड़ा गया रवि खान पूर्व में कारोबारी के घर पर ड्राइवर की नौकरी करता था और शालिनी पिछले 6 माह से घरेलू सहायिका के रूप में कार्यरत थी। काम करने के दौरान रवि खान और शालिनी की आपस में जान पहचान हो गई। कुछ समय पूर्व रवि खान ने नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद भी रवि खान घरेलू सहायिका शालिनी के संपर्क में था। शालिनी ने उसे बताया कि घर में कैश रखा हुआ है। इस पर दोनों ने साथ मिलकर घर में चोरी की योजना बनाई। योजना के तहत दोनों ने 26 सितंबर की रात्रि को 7 लाख रुपए चोरी कर लिए। पकड़े गए आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उन्हें न्यायालय में पेश किया गया जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

किशोरी को भगा ले गया पड़ोसी

नोएडा (चेतना मंच)। थाना फेस-2 क्षेत्र के भंगेल से एक (12 वर्षीय) किशोरी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। किशोरी की मां ने पड़ोस में रहने वाली महिला, उसके पति तथा एक अन्य युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। भंगेल में रहने वाली कोमल (काल्पनिक नाम) ने बताया कि उसकी (12 वर्षीय) बेटी पूनम (काल्पनिक नाम) पड़ोस में रहने वाले अजय पुत्र श्यामवीर से बात करती थी। अजय उनके पास के कमरे में ही किराए पर रहता था। 30 सितंबर को उनकी बेटी संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई।

बिरौंड़ी की श्री धार्मिक रामलीला नौसिखियों को सौंपा मीडिया प्रभारी का दायित्व

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। बिरौंड़ी गांव में चल रही रामलीला में मीडिया का काम देख रहे धीरेंद्र भाटी अपना दायित्व निर्वहन करने में निष्क्रिय साबित हो रहे हैं। रामलीला कमेटी ने उन्हें मीडिया का कार्यभार सौंपा था जिसे वह मीडिया के लोगों को रामलीला मंचन प्रेषित करें। लेकिन उनकी निष्क्रियता के चलते मीडिया कर्मियों को रामलीला मंचन की सूचनाएं नहीं मिल पा रही हैं।

इस बारे में जब रामलीला समिति के अध्यक्ष आनंद भाटी से बात की गई तो उन्होंने यह कहते हुए अपना पल्ला झाड़ लिया कि रामलीला कमेटी के मीडिया प्रभारी अभी नौसिखिए हैं। उन्हें कोई भी जानकारी नहीं है। वर्षों से हो रही रामलीला कमेटी के मंचन को खराब करने का काम मीडिया प्रभारी द्वारा किया जा रहा है। यही नहीं मीडिया प्रभारी का कार्यभार देख रहे भाटी किसी भी मीडियाकर्मी का फोन भी नहीं उठाते हैं।

ग्रेटर नोएडा में शुरू रिन्यूएबल एनर्जी इंडिया एक्सपो

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। इंडिया एक्सपो मार्ट में आज से रिन्यूएबल एनर्जी इंडिया (आरईआई) एक्सपो के 17वें संस्करण तथा बैटरी शो इंडिया के दूसरे संस्करण का शुभारंभ हो गया। इन्फोर्मा मार्केट्स इन इंडिया द्वारा आयोजित तीन दिवसीय इन शो के माध्यम से भारत के उभरते एनर्जी सिस्टम में इनोवेशन और स्थायित्व को गति मिलने का दावा किया गया है। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि पधारे राजस्थान के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने कहा कि पवन एवं सौर ऊर्जा के विकास के लिए राजस्थान में सबसे अच्छी परिस्थितियां उपलब्ध हैं।

इस अवसर पर मनु श्रीवास्तव, अपर मुख्य सचिव, विद्युत एवं नवीकरणीय उर्जा विभाग, मध्य प्रदेश सरकार शांतनु जयसवाल, हैड ऑफ इंडिया रीसर्च, ब्लूमबर्ग, एनईएफ; एलेक्स व्हिटवर्थ, वाईस प्रेजीडेंट एवं हैड ऑफ एशिया पेसिफिक पावर एण्ड रीन्युएबल्स रीसर्च, वुड मैकेन्जी; श्री पीटर हॉल, प्रेजीडेंट, आईएमईटीए क्षेत्र, इन्फोर्मा मार्केट्स; योगेश मुद्रास, मैनेजिंग डायरेक्टर, इन्फोर्मा मार्केट्स इन इंडिया और रजनीश खट्टर, सीनियर ग्रुप डायरेक्टर, एनर्जी पोर्टफोलियो, इनफोर्मा मार्केट्स इन इंडिया शामिल रहे।

पैरामाउंट गोल्फ फोरेस्ट सोसायटी में 5वां पीजीएफ माइक्रो मैराथन का सफल आयोजन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। गत 2 अक्टूबर को पैरामाउंट गोल्फ फोरेस्ट सोसायटी में 5वें पीजीएफ माइक्रो मैराथन 2024 का उत्साहपूर्ण और सफल आयोजन हुआ। इस आयोजन में 459 धावकों ने हिस्सा लिया, जिसमें सभी आयु वर्गों—बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों ने जोरदार भागीदारी की। सोसायटी में उत्साह और जोश का माहौल छाया रहा, जहाँ सभी रेजिडेंट्स ने बढ़-चढ़कर इस आयोजन में सहयोग दिया, जिससे यह आयोजन एक बड़ी सफलता में बदल गया।

इस आयोजन में कुल 10 रेस आयोजित की गई, जिसमें भाग लेने वालों ने अपनी धैर्य और फिटनेस का प्रदर्शन किया। बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी ने पूरे जोश के साथ दौड़ लगाई और अपनी ऊर्जा का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के विजेताओं को हार्दिक बधाई दी गई, और उन्हें उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए आयोजक टीम ने अथक मेहनत की। मुख्य आयोजकों में अशोक चौधरी, अलंकार शर्मा, अरुण गोयल,उत्सव राय प्रमुख रूप से शामिल थे। इनके अलावा, एक मजबूत और समर्पित टीम के रूप में एड गौरव शर्मा, बब्बन सिंह, राम ललित चौधरी, अशोक बाल्यान, सुभाष चंद्र पाल, सोमेश त्रिपाठी, अतुल सक्सेना, प्रिंस वर्मा, मिनी उन्नीनाथन, सचिन दुग्गल, सौरभ मिश्रा, रवि लखनपाल, गौरी वर्मा, मोनिका शर्मा, मोनिका गोयल, प्रियंका गेरा, रजनीश गुप्ता, हरबीर, संजीव ठाकुर, विशाल, तनिशा, निशांत सक्सेना, वरिष्ठ पत्रकार गौरव शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

दैनिक चेतना मंच
भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।
डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99
RNI No. 69950/98
स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया।
संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी
Contact:
0120-2518100, 4576372, 2518200
Mo.: 9811735566, 8750322340
E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

एमिटी में इंडियन एंथ्रोपोलॉजीकल सोसाइटी का वार्षिक सम्मेलन

नोएडा (चेतना मंच)। एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियल साइंसेस के एन्थ्रोपोलॉजी विभाग द्वारा ''एन्थ्रोपोलॉजी में वैश्विक दृष्टिकोण स्थिरता, समानता और प्रगति को बढ़ावा देना'' विषय पर इंडियन एंन्थ्रोपोलॉजीकल सोसाइटी की 54 वें वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए भारत सरकार की संस्कृति मंत्रालय की संयुक्त सचिव डा उमा नंदुरी ने कहा कि एमिटी द्वारा आयोजित यह सम्मेलन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। एक सम्मेलन में इतने सारे विद्वानों एवं विशेषज्ञों के आपसी मंथन का लाभ छात्रों को भी अवश्य प्राप्त होगा। एन्थ्रोपोलॉजी, सतत विकास लक्ष्यों के सभी 17 लक्ष्यों में शामिल है इसलिए इसका महत्व और अधिक बढ़ गया है।

एंन्थ्रोपोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया के निदेशक डा बी वी शर्मा ने कहा कि यह सम्मेलन हम सभी के लिए एक बेहतरीन अवसर है। एन्थ्रोपोलॉजी में अंत: विषयक शोध एंव पाठयक्रम को जोड़ने की बृहद क्षमता है। हमें एन्थ्रोपोलॉजी शोध को अधिक सार्थक एवं प्रांसगिक बनाना चाहिए इसलिए एप्लाईड एन्थ्रोपोलॉजी के साथ जिम्मेदार अनुसंधान पर ध्यान विकसित करना होगा।

सोसाइटी फॉर इंडियन मेडिकल एंथ्रोपोलॉजी के अध्यक्ष डा पी सी जोशी ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक सम्मेलन है जो एंथ्रोपोलॉजी की सबसे पुरानी संस्था के साथ आयोजित किया जा रहा है। एंथ्रोपोलॉजी का वैश्विक परिदृश्य विकसित भारत के संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण है, हमने सदैव वसुधैव कुटुंबकम के सार को आत्मसात किया है।

एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियल साइंसेस की निदेशक डा निरूपमा प्रकाश,एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियल साइंसेस के एन्थ्रोपोलॉजी विभाग की प्रमुख डा रूमि देब ने भी छात्रों को संबोधित किया।

कार्यालय-नगर पालिका परिषद, दादरी, जनपद-गौतमबुद्धनगर

पत्रांक : 1625 /न0पा0परि0दा0 / ई0नि0सू0 / 2024-25 दिनांक : 01 अक्टूबर 2024

ई-निविदा सूचना

नगर पालिका परिषद दादरी जनपद गौतमबुद्धनगर क्षेत्र में बोर्ड फण्ड/ राज्य वित्त आयोग / कान्हा गौशाला फण्ड के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि से अस्थायी गौशाला में भूसा, हरा-चारा, चोकर, खली व गुड़ आपूर्ति कार्य, हेतु फर्मो//ठेकेदार / आपूर्तिकर्ताओं से ई-निविदा के माध्यम से दरें आमंत्रित की जाती है। इस हेतु ई-निविदा दिनाँक :-03.10.2024 से दिनाँक:-23.10.2024 तक ऑनलाइन वेबसाइट https://etender.up.nic.in पर प्रात: 10:00 बजे से सायं 05:00 बजे तक डाउनलोड कर अपलोड की जा सकती हैं। ई-निविदा के सम्बन्ध में निविदादाता कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। उक्त कार्यों की ई-निविदा दिनाँक : -24.10.2004 को अपराहन 12:00 बजे खोली जायेगी, जिसे सम्बन्धित वेबसाइट https://etender.up.nic.in पर देखा जा सकता है।

किसी भी ई-निविदा को स्वीकार एवं अस्वीकार करने का अधिकार सक्षम अधिकारी में निहित होगा। निविदा शुल्क एवं जमानत धनराशि आर0टी0जी0एस0 के माध्यम से नगर पालिका परिषद दादरी के खाता संख्या 50100065525653 एच0डी0एफ0सी0 बैंक शाखा दादरी IFSC Code-HDFC0000927 में जमा करायी जायेगी, जिसकी कॉपी सम्बन्धित ठेकेदारों द्वारा टेण्डर अपलोड करते समय अपलोड को जायेगी। बिना धरोहर धनराशि के निविदा पर विचार नहीं किया जायेगा। कार्य से सम्बन्धित नियम व शर्ते कार्यालय नगर पालिका परिषद दादरी में किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय समय में देखा जा सकता हैं।

उमेश शर्मा	जयपाल सिंह	शालिनी गुप्ता	गीता शर्मा
लिपिक लेखा विभाग	अवर अभियन्ता (सिविल)	अधिशासी अधिकारी	अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर)	नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर	नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर)	नगर पालिका परिषद, दादरी (गौतमबुद्धनगर)

56 वर्ष बाद मिले शहीद सैनिक के शव का सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

एजेंसी

गोपेश्वर। लगभग 56 वर्ष पूर्व एक विमान दुर्घटना के बाद से लापता चमोली जिले के थराली विकास खंड के कोलपुड़ी निवासी शहीद नारायण सिंह का गुरुवार को उनके पैतृक घाट पर सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कर दिया गया है। उनके अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने उन्हें अंतिम विदाई दी और थराली -घाट मोटरमार्ग का नामकरण शहीद नारायण सिंह बिष्ट के नाम से रखने की मांग की। दरअसल, 7 फरवरी 1968 में 102 क्रू मेंबरों को ले जा

रहा विमान के चंडीगढ़ से उड़ान भरने के बाद हिमाचल प्रदेश के रोहतांग दर्रे के ढाका ग्लेशियर में क्रैश हो गया था। इस दुर्घटना के बाद चमोली जनपद के कोलपुड़ी गांव निवासी 404 मिडयम बटालियन के सिपाही नारायण सिंह सहित कई सैनिक लापता हो गए थे। हाल ही में हिमाचल प्रदेश के लाहुल और स्पीति जिले के बटाल के पास चन्द्रभागा रेंज की चोटी पर 56 साल बाद चार शव बरामद हुए। इनमें चमोली जिले के थराली के कोलपुड़ी निवासी सिपाही नारायण सिंह का भी शव मिला। शहीद नारायण सिंह बिष्ट के पार्थिव शरीर को वायुसेना के हेलीकॉप्टर से बुधवार को गौचर हवाई पट्टी लाया गया। जहां से उन्हें रुद्रप्रयाग ले जाया गया था। शुक्रवार को सेना के वाहन से शहीद सैनिक का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव लाया गया। शहीद के पार्थिव शरीर के गांव में पहुंचने पर सभी लोगों की आंखें छलक आयी। यहां पर उन्हें परिजनों के साथ ही अन्य लोगों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आज निकलेगी नसरल्लाह की अंतिम यात्रा

तेहरान। हसन नसरल्लाह के जनाजे के दिन ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला अली खामेनेई जुमे की नमाज की अगुवाई करेंगे। यह नसरल्लाह की मौत के बाद खामेनेई पहली बार सार्वजनिक रूप से इसमें शामिल होंगे। उन्हें नसरल्लाह की मौत के बाद सुरक्षित स्थान पर भेज दिया गया था। नसरल्लाह की अंतिम यात्रा शुक्रवार को निकाले जाने की खबर है, लेकिन उनके जनाजे की तारीख और स्थान के बारे में कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। हालांकि, मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक नसरल्लाह के जनाजे में भारी भीड़ उमड़ने की उम्मीद है, जो उनकी लोकप्रियता और हिज्बुल्लाह के प्रति लोगों की निष्ठा को दशार्ता है। इस घटना के मद्देनजर, मिडिल ईस्ट में तनाव और अस्थिरता की स्थिति को देखते हुए सुरक्षा प्रबंधों को ध्यान में रखते हुए आयोजनों की योजना बनाई जा रही है। हिज्बुल्लाह और उसके समर्थकों के बीच जनाजे को लेकर एकत्र होने वाले जनसमूह के संभावित आकार को देखते हुए सुरक्षा बलों की तैनाती की जाएगी।

पाक में पोलियो के दो मामले आए सामने

करांची। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में पोलियो के दो नए मामलों की पुष्टि होने से देश में अब इनकी संख्या 26 हो गई है। ये नए मामले कराची पूर्व और सुजावल जिलों में सामने आए हैं, जिससे पोलियो वायरस के उन्मूलन के प्रयासों को झटका लगा है।

प्राधिकरणकर्मियों के स्वास्थ्य के लिए जांच शिविर का आयोजन

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की तरफ से अपने अधिकारियों-कर्मचारियों के स्वास्थ्य की जांच के लिए जांच शिविर का आयोजन किया गया। करीब 200 प्राधिकरणकर्मियों ने स्वास्थ्य की जांच कराई। मेट्रो हॉस्पिटल के सहयोग से आयोजित इस शिविर में ब्लड प्रेशर, शुगर, हार्ट आदि की निशुल्क जांच की गई। प्राधिकरण के एसीईओ आशुतोष द्विवेदी और श्रीलक्ष्मी वीएस ने जांच शिविर का मुआयना किया। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार के निर्देश पर आयोजित इस शिविर में प्राधिकरण कर्मियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।सीईओ का कहना है कि इस तरह के प्रयास आगे भी किए जाएंगे।

नवरात्रि के पहले दिन मंदिरों में उमड़े भक्त

एजेंसी

नई दिल्ली। शारदीय नवरात्रि शुरू हो गए हैं। सुबह से ही मंदिरों में भक्तों की लंबी कतार देखी जा सकती है। अलग-अलग मंदिरों से विजुअल सामने आ रहे हैं। असम गवर्नर लक्ष्मण प्रसाद आचार्य शारदीय नवरात्रि के पहले दिन कामाख्या मंदिर पहुंचे। उन्होंने देवी दर्शन किया। इस दौरान मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ देखने को मिली। बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर नवरात्रि के पहले दिन हरियाणा के पंचकुला स्थित मनसा देवी मंदिर दर्शन करने पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैं शारदीय नवरात्रि के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं देता हूं। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह हम सभी पर आशीर्वाद बनाए रखें और हमारा देश प्रगति करता रहे। भगवान युद्ध के इस समय में दुनिया में शांति लाएं।

चीन से आने वाले सामान पर पैनी नजर रखेगी केंद्र सरकार

एजेंसी

नई दिल्ली। मोदी सरकार ने चीन से आने वाले सामानों पर पैनी नजर रखने की तैयारी कर ली है। हाल ही में इजरायल द्वारा हिज्बुल्लाह के खिलाफ की गई कार्रवाई से मिली सीख के बाद, मोदी सरकार ने स्मार्ट मीटर, पार्किंग सेंसर, ड्रोन के पुर्जे, और लैपटॉप-डेस्कटॉप जैसे सामानों की जांच कराने का निर्णय लिया है। मोदी सरकार के इस कदम का उद्देश्य उन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है जो इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी) का हिस्सा हैं। ऐसी आशंका है कि उत्तर सीमा पार की कंपनियों और एजेंसियों को इन उपकरणों के माध्यम से संवेदनशील डेटा मिल सकता है। इसलिए, निगरानी कैमरों की सुरक्षा

में खामियों का पता चलने के बाद मोदी सरकार ने कैमरों की जांच को अनिवार्य किया है। इसके लिए आवश्यक सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए निर्धारित लैब से जांच कराई जाएगी।

इसके अतिरिक्त, सिस्टम ऑन ए चिप (एसओसी), जो कि एक इंटीग्रेटेड सर्किट (आईसी) होता है, भी जांच के दायरे में रखा गया है। इतना ही नहीं मोदी सरकार का उद्देश्य इलेक्ट्रॉनिक सामानों के लिए एक विश्वसनीय सप्लाई चेन स्थापित करना है, ताकि विदेशी कंपनियों को कोई लाभ न मिल सके, खासकर जब हमारे आस-पास शत्रुतापूर्ण माहौल हो। इसके पहले मोदी सरकार ने टैरिफ बढ़ाकर चीन से आयात को रोकने की कोशिश की थी, लेकिन अब तकनीकी मानकों पर ध्यान देने की योजना बनाई है। चीनी कंपनियों द्वारा सस्ते उपकरण बनाने के कारण, ऊंचे टैरिफ की दीवारें भी बाजार में उनकी मौजूदगी को सीमित नहीं कर पा रही हैं।

पिछले साल पीसी और लैपटॉप उद्योग ने आयात पर सरकारी नियंत्रण का विरोध हुआ था, यह आरोप लगाते हुए कि इससे आपूर्ति में कमी और कीमतों में वृद्धि होगी, जिससे उपभोक्ताओं पर नकारात्मक असर पड़ेगा। हालांकि, केंद्र सरकार का मानना है कि धीरे-धीरे बदलाव लाना अधिक लाभदायक होगा।

जापान के हवाई अड्डे पर फटा बम, 80 उड़ानें रद्द

टोक्यो। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान फेंका गया बम उस समय तो नहीं फटा लेकिन बीते रोज अचानक जापान के हवाई अडडे पर फट गया।यह बम इस एयरपोर्ट में दफन था, लेकिन बुधवार को उसमें विस्फोट हो गया, जिससे हड़कंप मच गया। ब्लास्ट से ह्यटैक्सीवे में बड़ा गड्ढा हो गया और 80 से अधिक उड़ानें रद्द करनी पड़ीं। हालांकि किसी के हताहत होने की खबर नहीं है। जापानी अधिकारियों ने यह जानकारी दी। भूमि एवं परिवहन मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि दक्षिण-पश्चिमी जापान के मियाजाकी हवाई अड्डे पर जब बम विस्फोट हुआ, तब वहां कोई विमान नहीं था।अधिकारियों ने बताया कि आत्मरक्षा बलों और पुलिस द्वारा की गई जांच से पुष्टि हुई है कि विस्फोट 500 पाउंड के अमेरिकी बम से हुआ था और अब कोई खतरा नहीं है।

किश्तवाड़ जिले में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़

एजेंसी

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के चटरू इलाके में गुरुवार को सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हो गई। सुरक्षाबलों को इलाके में आतंकवादी होने की सूचना मिली थी, जिसके आधार पर उन्होंने संयुक्त तलाशी अभियान चलाया। जब आतंकवादियों ने अपने को सुरक्षाबलों को घिरा देखा, तो उन्होंने गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षाबलों ने भी जवाब में फायरिंग की लेकिन इस मुठभेड़ में अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। जम्मू-कश्मीर में हाल के दिनों में आतंकवादियों और सुरक्षाबलों के बीच कई मुठभेड़ें हुई हैं, जिनमें कई आतंकवादी मारे गए हैं। इन घटनाओं में कुछ सुरक्षाकर्मी भी शहीद हुए हैं। पहले आतंकवादी गतिविधियां पुंछ और राजौरी जिलों तक सीमित थीं, लेकिन अब यह खतरा जम्मू के अन्य क्षेत्रों में भी नजर आने लगा है, जो कुछ साल पहले तक आतंकवाद से मुक्त माना जाता था। विशेष रूप से चिनाब घाटी, उधमपुर, और कठुआ को आतंकवाद मुक्त घोषित किया गया था, लेकिन अब प्रशिक्षित आतंकवादी वाहनों पर घात लगाकर हमले कर रहे हैं। वे ग्रेनेड, कवच-भेदी गोलियों के साथ-साथ अत्याधुनिक एम4 असॉल्ट राइफलों का इस्तेमाल कर रहे हैं, जो सुरक्षा बलों के लिए चिंता का विषय बन गया है। सूत्रों ने बताया कि आतंकवादियों द्वारा उच्च तकनीक हथियारों का इस्तेमाल सुरक्षा खतरे को बढ़ा रहा है।

पुलिस ने नवरात्र को लेकर जारी की श्रद्धालुओं के लिए यातायात व्यवस्था

एजेंसी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर यातायात पुलिस ने नवरात्र के चलते श्रद्धालुओं के लिए विशेष यातायात एडवाइजरी जारी की है। यह एडवाइजरी 3 से 12 अक्टूबर तक काली माता मंदिर बाग-ए-बाहू जम्मू और कंडोली माता नगरोटा आने वाले भक्तों के लिए जारी की है। पुलिस ने श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे इन मंदिरों तक पहुंचने के लिए विशेष मार्ग का पालन करें ताकि यातायात का दबाव कम हो सके।

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने पोस्ट में कहा कि नवरात्र में बहू किला मार्ग को अवरोधों से मुक्त रखने बाग-ए-बहू मंदिर की ओर वाहनों की आवाजाही एकतरफा रहेगी। इस अवधि के दौरान किसी भी वाहन को बहू फोर्ट रोड से बाग-ए-बहू की ओर जाने की अनुमति नहीं होगी। पी एस बाग-ए-बहू क्रॉसिंग डायवर्जन पॉइंट होगा और वहां से जाने वाले सभी वाहनों को कासिम नगर की ओर डायवर्ट किया जाएगा, फिर वहां से एनएचडब्ल्यू और फॉरेस्ट चेक के जरिए काली माता मंदिर की ओर भेजा जाएगा। श्रद्धालुओं और वाहन चालकों को एकतरफा मार्ग का पालन करने को कहा गया है ताकि श्रद्धालुओं के वाहनों की आवाजाही बिना किसी बाधा के जारी रहे।

बांग्लादेश ने भारत से वापस बुलाए अपने राजदूत

ढाका। बांग्लादेश की यूनुस सरकार ने भारत सहित पांच देशों से अपने राजदूतों को वापस बुलाने का फैसला किया है। इस सप्ताह संयुक्त राष्ट्र से भी अपने राजनयिकों को वापस बुला लिया है। नाम न बताने की शर्त पर इस मामले से परिचित लोगों ने बताया कि बांग्लादेश के विदेश मंत्रालय के प्रशासनिक प्रभाग द्वारा जारी किए गए आदेश से विदेश सेवा के अधिकारी नाराज हैं। उनका कहना है कि भारत में उच्चायुक्त सहित वापस बुलाए गए कई राजदूत राजनीतिक तौर पर नियुक्त नहीं किए गए थे।लोगों ने बताया कि भारत में उच्चायुक्त मुस्तफिजुर रहमान के अलावा, वापस बुलाए गए अन्य लोगों में न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के स्थायी प्रतिनिधि और ऑस्ट्रेलिया, बेल्जियम और पुर्तगाल में राजदूत शामिल हैं।

ईरान ने इजरायल पर बरसाए प्रतिबंधित क्लस्टर बम

एजेंसी

तेलअवीव । बीते रोज ईरान ने इजरायल पर जमकर बम बरसाए। हालांकि इससे कोई बहुत बड़ा नुकसान नहीं हुआ है। इसके बाद जो खबरें आ रहीं हैं वो चौकाने वाली हैं। बताया जा रहा है कि ईरान ने प्रतिबंधित क्लस्टर बमों से हमला किया है। वर्तमान में, 100 से अधिक देशों ने इन बमों के उत्पादन और उपयोग के खिलाफ संधि पर हस्ताक्षर किए हैं। हालांकि, अभी भी 34 देशों के पास लगभग 200 विभिन्न प्रकार के क?लस?टर बम मौजूद हैं। हाल ही में, जब अमेरिका ने यूक्रेन को क?लस?टर बम सप्लाई करने की योजना का ऐलान किया, तो रूस ने इसकी कड़ी निंदा की थी। अमेरिका

के इस कदम से रूस की स्थिति में कमजोरी आई है, क्योंकि क्लस्टर बमों की घातकता और मानवीय संकट को देखते हुए उन्हें अत्यंत संवेदनशील हथियार माना जाता है। इस प्रकार, क्लस्टर बमों के उपयोग से उत्पन्न चुनौतियाँ और खतरे वैश्विक स्तर पर गंभीर चिंताओं का विषय बने हुए हैं। क्लस्टर बम एक प्रकार का हथियार होता है, जिसमें कई छोटे बमों को एक साथ पैक किया जाता है। ये छोटे बम, जिन्हें सबम्यूनिशन या बॉम्बलेट्स कहा जाता है, आमतौर पर एक बड़े बम के अंदर रखे जाते हैं। जब ये बम जमीन पर गिरते हैं, तो बड़े बम का विस्फोट होते ही कई छोटे बम एक साथ फटते हैं। इस प्रक्रिया में, इन छोटे बमों को नियंत्रित करना बेहद मुश्किल होता है। क्लस्टर बमों को फाइटर जेट, बमवर्षक विमानों और मिसाइलों से छोड़ा जा सकता है।क्लस्टर बमों की मारक क्षमता अत्यधिक होती है। ये बम एक बड़े क्षेत्र में फैलाव करते हैं और आस-पास के लक्ष्यों को नष्ट कर सकते हैं। इनमें से कई छोटे बम जमीन पर गिरने के बाद भी नहीं फटते हैं, जिससे वे सड़क पर बम का रूप ले लेते हैं। ये बाद में जब भी कोई इंसान या वाहन इनके संपर्क में आता है, तो धमाके का कारण बन सकते हैं।

पृष्ठ एक के शेष....

मिर्जापुर में...

होकर बाइक को टक्कर मारते हुए ट्रैक्टर से टकराया। टक्कर इतनी जोर दार थी की ट्रैक्टर कुछ ऊपर उछल कर सड़क के बगल नाले में चला गया। फिर ट्रक उसके ऊपर से होते हुए नाले में फंस गया। नाले में पानी भरा था। कुछ की जोरदार टक्कर तो कुछ की नाले में दबने से मौत हो गई। लगभग रात 12:30 बजे घटी घटना की सूचना मिलते ही मौके पर सीओ सदर अमर बहादुर सहित आस पास के थानों की फोर्स ने पहुंचकर राहत बचाव कार्य शुरू किया। नाले से शव निकाले गए तो सड़क पर स्थित क्षत विक्षत शवों को हटवाया गया।

गंभीर रूप से घायल तीन लोगों को ट्रामा सेंटर वाराणसी भेजा गया। दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों ने सड़क जाम कर दिया। एसपी अभिनन्दन और सीओ सदर ने लोगों को समझा बुझाकर जाम समाप्त कराया। मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक ओम प्रकाश सिंह और एसडीएम गुलाब चंद्र भी मौके पर पहुंचे। वाहनों के बिखरे टुकड़ों को हटाने का कार्य चल रहा था।

इस हादसे के बाद मृतकों के परिवारों में मातम पसरा हुआ है। गांव बीरबलपुर में सन्नाटा है। इस हादसे में भानु प्रताप (26), अनिल कुमार (35), सूरज (24), विकास (24), नानक (18), नितिन (22), मुन्ना (25), टेरूं (25), सनोहर (24), प्रेम शंकर (40) की मृत्यु हो गई है। जबकि जमुनी (26), आकाश (18), अजय (40) घायल हैं।

तिरूपति के...

कहा कि अगर आरोप में कोई भी सच्चाई है तो यह अस्वीकार्य है। सॉलिसिटर जनरल ने कहा कि एसआईटी की निगरानी किसी वरिष्ठ केंद्रीय अधिकारी की ओर से की जाए, इससे लोगों में भरोसा बढ़ेगा। एसजी ने कहा कि देश भर में भक्त हैं, खाद्य सुरक्षा भी है। मुझे एसआईटी के सदस्यों के खिलाफ कोई शिकायत नहीं मिली।

इस पर सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया कि एक स्वतंत्र एसआईटी बनाई जाए। इसमें सीबीआई और राज्य सरकार से दो-दो सदस्य रह सकते हैं। इसके अलावा FSSAI से भी एक सदस्य को इस समिति में रखा जाए। खाद्य पदार्थों की जांच के मामले में FSSAI सबसे विशेषज्ञ शीर्ष निकाय है। 'सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह करोड़ों लोगों की आस्था का सवाल है। ऐसे में वह नहीं चाहता कि यह राजनीतिक ड्रामा बन जाए।' अगर एक स्वतंत्र निकाय होगा, तो विश्वास पैदा होगा। सर्वोच्च न्यायालय ने यह टिप्पणी करते हुए याचिका का निपटारा कर दिया कि यदि कोई बात हो तो आप जांच लंबित रहने तक फिर से न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकते हैं।

प्रोन्नति के बाद जीएम (सिविल)...

को महाप्रबंधक (सिविल) के पद पर प्रोन्नत करके उनकी तैनाती ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण में कर दी गयी है। औद्योगिक विकास विभाग के संयुक्त सचिव जयवीर सिंह द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि सीईओ यीडा उनको तत्काल प्रभाव से रिलीव कर दे ताकि वे एक सप्ताह के अंदर ग्रेटर नोएडा में नवीन तैनाती स्थल पर कार्यभार ग्रहण कर सकें।

माता की जोत ला...

खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पोपिन ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि उसका (6 वर्षीय) भतीजा राज 30 सितंबर को होंडा पावर गेट के पास चल रहे कार्यक्रम को देख रहा था। इस दौरान तेज गति में आ रहे वेगनार कार के चालक ने उसके भतीजे को टक्कर मार दी। मौके पर मौजूद लोगों ने कार चालक को पकड़ लिया और गंभीर रूप से घायल राज को यथार्थ अस्पताल में भर्ती कराया। चिकित्सकों ने जांच के बाद बताया कि इस हादसे में बच्चे के फेफड़े फट गए हैं। इसके बाद उसके भतीजे को एम्स के लिए रेफर कर दिया गया जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

सीईओ ने पुष्करणी...

सेक्टर-104, 105, 108, 110, 82 व 93 के लोग इसका सीधा लाभ ले सकेंगे। इस अवसर पर अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी वंदना त्रिपाठी, उद्यान विभाग के निदेशक आनंद मोहन सिंह, आरडब्ल्यूए अध्यक्ष विनोद शर्मा तथा अन्य लोग मौजूद थे।

अजनारा होम्स के...

बाजार में खरीदारी कर वापस घर लौट रही थी। वह सोसायटी के गेट नंबर 1 के पास पहुंची तो पीछे से बाइक पर आए दो बदमाशों ने उनके गले से सोने की चेन और पेंडेंट लूट लिया और फरार हो गए। कुंदन कुमार के मुताबिक सोने की चेन और पेंडेंट का बाजार वैल्यू करीब सवा दो लाख रुपए से ऊपर है। जिस समय यह घटना हुई वहां से करीब 100 मीटर की दूरी पर पुलिस की गाड़ी भी खड़ी हुई थी। घटना होने के तुरंत बाद उन्होंने चेरी काउंटी चौकी के इंचार्ज मनोज कुमार को इसकी जानकारी दी। पुलिसकर्मियों ने उन्हें आश्वासन दिया कि जल्दी बदमाशों को पकड़ लिया जाएगा लेकिन उनकी एफआईआर दर्ज नहीं की गई। कई दिनों तक चौकी के चक्कर काटने के बावजूद भी उनकी एफआईआर दर्ज नहीं की गई। इसके बाद उन्होंने उत्तर प्रदेश पुलिस की वेबसाइट पर ई-एफआईआर दर्ज कराई लेकिन वह रिजेक्ट हो गई। दूसरी बार भी एफआईआर रिजेक्ट होने पर उन्होंने ट्विटर पर उत्तर प्रदेश पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों से इस घटना की शिकायत की।

वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के निर्देश पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ अब मुकदमा दर्ज किया गया है। थाना प्रभारी का कहना है कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है। जल्द ही बदमाश पुलिस के शिकंजे में होंगे।

बाइक सवार की...

उपचार के दौरान बीरबल कुमार शर्मा की मौत हो गई। इस संबंध में मृतक के भाई तेज प्रताप शर्मा ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है।

स्कूटी व तीन बाइक चोरी

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना बिसरख क्षेत्र के गैलेक्सी ब्लू सफायर मॉल में घूमने आए एक व्यक्ति की स्कूटी पर चोरों ने हाथ साफ कर दिया। ग्रेटर नोएडा वेस्ट के सेक्टर 3 के अथॉरिटी विला में रहने वाले अतुल कुमार शुक्ला ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि वह 15 अगस्त को अपने परिवार के साथ गैलेक्सी ब्लू सफायर मॉल घूमने आया था। उसने अपनी स्कूटी माल के गेट नंबर 2 के सामने पार्क कर दी। कुछ देर बाद जब वह माल से बाहर आए तो उनकी स्कूटी गायब थी। पुलिस ने करीब डेढ़ माह बाद चोरी की रिपोर्ट दर्ज की है। थाना फेस दो में याकूबपुर गांव में रहने वाले नवनीत कुमार ने अपनी बाइक चोरी होने की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

नवनीत कुमार ने बताया कि उसने 26 सितंबर को अपनी बाइक घर के बाहर खड़ी की थी। सुबह जब वह सो कर उठा तो उसकी बाइक गायब थी।

थाना सेक्टर-63 की एक कंपनी के बाहर से गाजियाबाद निवासी मुकुल शर्मा की बाइक चोरी हो गई। दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उसने 17 सितंबर को सेक्टर-63 बी ब्लॉक में स्थित कंपनी के बाहर बनी पार्किंग में अपनी बाइक पार्क की थी। इसके बाद वह कंपनी में चला गया। कुछ देर बाद जब वह वापस लौटा तो उसकी बाइक गायब थी।

वहीं थाना सूरजपुर क्षेत्र के पंछी विहार देवला गांव से एक व्यक्ति की बाइक चोरी हो गई। मूल रूप से सोनीपत हरियाणा निवासी प्रदीप कुमार ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह हाल में पंछी विहार देवला गांव में रह रहा है। उसने 25 सितंबर को अपनी बाइक घर के बाहर खड़ी की थी। सुबह उसे बाइक गायब मिली। उसने अपनी बाइक की काफी तलाश की लेकिन कोई पता नहीं चला। पुलिस ने पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया है।

बता दें कि वाहन चोर आए दिन लाखों रुपए के वाहनों पर हाथ साफ कर रहे हैं। पुलिस यदा कदा वाहन चोर गिरोह के सदस्यों को पकड़कर चोरी के वाहन भी बरामद कर रही है लेकिन चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने में नाकाम साबित हो रही है।

स्ट्रीट लाइट की शिकायत मिलने पर 24 घंटे में हो ठीक करें-एसीईओ

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ प्रेरणा सिंह ने कहा है कि स्ट्रीट लाइट न जलने की शिकायत को 24 घंटे में दूर किया जाना चाहिए। इससे अधिक समय लगने पर लापरवाही मानते हुए कार्रवाई की जाएगी। एसीईओ ने विद्युत अभियांत्रिकी की टीम को अंधेरा होने पर फील्ड में जाकर इसकी पड़ताल करने के निर्देश दिए।

दरअसल, स्ट्रीट लाइट से जुड़ी शिकायतों को शीघ्रता से हल करने के लिए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने एसीईओ से नियमित रूप से समीक्षा करने के निर्देश दिए हैं। एसीईओ प्रेरणा सिंह ने बृहस्पतिवार को ओएसडी अभिषेक पाठक व विद्युत अभियांत्रिकी की टीम और सूर्या कंपनी व एनपीसीएल के साथ लंबी बैठक की। एसीईओ ने स्ट्रीट लाइट से जुड़ी शिकायतों को निपटाने में देरी होने की शिकायतों पर नाराजगी जताई। उन्होंने डीजीएम, वरिष्ठ प्रबंधक व प्रबंधकों को नियमित रूप से फील्ड में जाने और फील्ड स्टाफ की अटेंडेंस सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। एसीईओ ने साफ कहा कि सेक्टर हो गांव, स्ट्रीट लाइट खराब होने की शिकायत मिलने पर 24 घंटे में उसे हल किया जाना चाहिए। इससे अधिक समय लगने पर लापरवाही मानते हुए कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने स्ट्रीट लाइट के लिए जिम्मेदार सूर्या कंपनी को भी तय समय में स्ट्रीट लाइट को ठीक करने के निर्देश दिए।

एसीईओ ने इटैड़ा गोलचक्कर पर चल रहे कार्यों का किया निरीक्षण

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण की एसीईओ प्रेरण सिंह ने बृहस्पतिवार को ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित इटैड़ा गोलचक्कर का निरीक्षण किया। इटैड़ा गोलचक्कर पर ट्रैफिक की समस्या को दूर करने के लिए यूटर्न और सड़क चौड़ीकरण के कार्यों को देखा। सड़क चौड़ीकरण का कार्य गुणवत्तापरक न मिलने पर संबंधित वर्क सर्किल की टीम को फटकार लगाई। उन्होंने नियमित रूप से निगरानी करने और कार्य को तय समय में पूरा कराने के निर्देश दिए। इटैड़ा गोलचक्कर पर ट्रैफिक की समस्या को देखते हुए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार ने यूटर्न बनाने और सड़क को चौड़ा करने के निर्देश दिए हैं। यूटर्न का निर्माण लगभग पूरा हो चुका है। सड़क के चौड़ीकरण का कार्य पूरा होते ही वाहनों के लिए खोल दिया जाएगा।

खुशी ने जीता कांस्य पदक, भारत के पदकों की संख्या हुई 15

एजेंसी

लीमा। खुशी ने पेरू के लीमा में चल रही अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ जूनियर विश्व चैंपियनशिप राइफल/ पिस्टल/ शॉटगन में महिलाओं की 50 मीटर राइफल 3 पोजीशन (3पी) में कांस्य पदक जीता, जिससे भारत के पदकों की संख्या 15 हो गई। इन 15 पदकों में 10 स्वर्ण, एक रजत और चार कांस्य पदक शामिल हैं। भारत पदक तालिका में शीर्ष पर विराजमान है। युवा खिलाड़ी ने फाइनल में 447.3 अंक हासिल किए और नॉर्वे की कैरोलिन लुंड से पीछे रहीं, जिन्होंने 458.3 अंक के साथ रजत पदक जीता। कैरोलिन की हमवतन सिनोव बर्ग ने 458.4 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। खुशी क्वालिफिकेशन में 585 अंक के साथ सातवें स्थान पर रहीं और फाइनल में जगह पक्की की। मुकाबला इतना कड़ा हो गया कि चार अन्य खिलाड़ियों का स्कोर भी समान था, फिर भी खुशी और इटली की अन्ना शियावोन ने आंतरिक 10 रिंग में 29 शॉट के आधार पर अंतिम दो क्वालीफाइंग स्थान हासिल कर लिए, जबकि दो स्विस एथलीट एलेक्सा टेला और एमिली जैगी 27 शॉट ही बना पाईं। खुशी काउंटबैक में अन्ना से आगे रहीं। आठ महिलाओं के फाइनल में, खुशी पहले दो शॉट के अंत में चौथे स्थान पर थी, घुटने टेकने और लेटने की स्थिति में, लेकिन 40वें शॉट के अंत में नॉर्वे की पेरनील नोर-वोल को पछाड़कर तीसरे स्थान पर पहुँच गई, जो कि खड़े होने की स्थिति में 10वाँ शॉट था। 45 शॉट के फाइनल में सिनोएव और कैरोलीन के बीच शीर्ष दो के लिए अपनी-अपनी लड़ाई थी। खुशी 41वें शॉट पर 9.1 के साथ फिर से लड़खड़ाईं, जिससे वह फिर से पांचवें स्थान पर आ गईं, लेकिन 42वें शॉट पर शानदार 10.7 और 43वें शॉट पर 10.4 के स्कोर ने कड़ी मेहनत के साथ पदक सुनिश्चित किया। जूनियर महिला 3पी में टीम स्पर्धा में साक्षी पाडेकर, मेलविना जोएल ग्लैडसन और प्राची गायकवाड़ की तिकड़ी 1757 अंकों के साथ पांचवें स्थान

लीमा जूनियर शूटिंग विश्व चैंपियनशिप

डायमंड लीग 2025: चीन करेगा शुरूआती दो स्पर्धाओं की मेजबानी

एजेंसी

नई दिल्ली। ज्यूरिख अगस्त में 2025 डायमंड लीग के दो दिवसीय सीजन के समापन समारोह का आयोजन करेगा, जबकि प्रतियोगिता की शुरूआत चीन में दो मुकाबलों के साथ होगी। आयोजकों ने बुधवार को उक्त जानकारी दी। आयोजकों ने बुधवार को बताया कि ज्यूरिख अगस्त में 2025 डायमंड लीग के दो दिवसीय सीजन के समापन समारोह का आयोजन करेगा, जबकि प्रतियोगिता की शुरूआत चीन में दो मीट से होगी। ट्रैक एंड फील्ड की प्रीमियर वन-डे मीटिंग सीरीज के 16वें संस्करण के अनंतिम कैलेंडर में 14 देशों और चार महाद्वीपों के 15 मेजबान शहर शामिल हैं। शंघाई/सूजौ से एक हफ़्ते पहले 26 अप्रैल को ज़ियामेन उद्घाटन कार्यक्रम की मेजबानी करेगा। जून में रोम में होने वाली पहली यूरोपीय मीट से पहले मई में दोहा और रबात में मीटिंग निर्धारित हैं। ओस्लो, स्टॉकहोम और पेरिस में होने वाले आयोजनों के बाद, प्रतियोगिता संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित की जाएगी, जहाँ जुलाई में ओरेगन के यूजीन में प्रीफोंटेन क्लासिक का आयोजन किया जाएगा। मोनाको, लंदन, सिलेसिया, लॉजेन और ब्रुसेल्स जुलाई और अगस्त में मुकाबलों की मेजबानी करेंगे, उसके बाद ज्यूरिख में 2022 के बाद पहली बार फाइनल (27-28 अगस्त) का आयोजन किया जाएगा।

अश्विन ने की विराट और जडेजा की बराबरी

एजेंसी

कानपुर । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिनर आर अश्विन ने 10-10 बार प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड जीतने के मामले में विराट कोहली और रवींद्र जडेजा की बराबरी कर ली है। अश्विन ने बांग्लादेश के खिलाफ हुए दूसरे टेस्ट में अपने टेस्ट करियर का 10वां प्लेयर ऑफ द मैच और 11वां 11 प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड जीता

टेस्ट मैचों में भारतीय क्रिकेटरों में सबसे अधिक प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर के नाम हैं। सचिन ने 14 बार यह अवॉर्ड जीता है। वहीं इस सूची में दूसरे नंबर पर भारत के ही राहुल द्रविड़ हैं। द्रविड़ को 11 बार प्लेयर ऑफ द मैच पुरस्कार मिला है। अब न्यूजीलैंड के खिलाफ इसी माह होने वाली 3 मैचों की टेस्ट सीरीज में विराट , अश्विन या जडेजा के पास द्रविड़ के 11 प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड की बराबरी का अवसर है। अश्विन और जडेजा इस रेस में कोहली से थोड़ा आगे नजर आते हैं। इसका कारण है कि घरेलू सीरीज में स्पिनरों को लाभ होता है।

जडेजा ने अबतक 74 मैच में 10 बार प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड जीते हैं। अश्विन को इसके लिए 102 मैच खेलने पड़े हैं। कोहली को 115 टेस्ट के करियर में 10 बार यह अवॉर्ड मिला है। जडेजा औसतन हर 7वें मैच में यह अवॉर्ड जीत रहे हैं, जबकि अश्विन और कोहली को इसके लिए औसतन 10 मैच खेलने पड़े हैं।

जोश बटलर की इंग्लिश टीम में वापसी

एजेंसी

लंदन। वेस्टइंडीज के आगामी दौरे के लिए नियमित सीमित ओवरों के कप्तान जोस बटलर की इंग्लैंड की टीम में वापसी होगी। इंग्लिश टीम वेस्टइंडीज दौरे पर इस साल अक्टूबर-नवंबर में तीन टी20 और पाँच वनडे खेलेगी। बटलर हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 और वनडे मैचों में नहीं खेल पाए थे क्योंकि वे पिंडली की चोट से उबर रहे थे। इंग्लैंड ने टीम में तीन अनकैप्ड खिलाड़ियों को भी शामिल किया है, जिसमें 22 वर्षीय यॉर्कशायर के लेग स्पिनर जाफर चौहान शामिल हैं, जिन्हें सीनियर टीम में पहली बार शामिल किया गया है। वह साउथ एशियन क्रिकेट अकादमी के पहले स्नातक हैं। अन्य दो अनकैप्ड खिलाड़ी जॉन टर्नर और डैन मूसली हैं, जो ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में टीम का हिस्सा थे। इंग्लैंड ने 14 खिलाड़ियों की शुरूआती टीम चुनी है, और 28 अक्टूबर को रावलपिंडी में होने वाले सीरीज के तीसरे मैच के शुरू होने के बाद पाकिस्तान में टेस्ट टीम से दो और खिलाड़ी शामिल किए जाएंगे। बटलर की जगह ऑस्ट्रेलिया सीरीज में इंग्लैंड की अगुआई करने वाले हैरी ब्रूक टेस्ट टीम का हिस्सा हैं। कैरेबियाई दौरे की शुरूआत वनडे से होगी - पहले दो मैच 31 अक्टूबर और 2 नवंबर को एंटीगुआ में होंगे, उसके बाद 6 नवंबर को तीसरे मैच के लिए बारबाडोस जाएंगे। पांच टी20 मैच 9 से 17 नवंबर के बीच खेले जाएंगे।

बांग्लादेशी क्रिकेटर मेहदी ने रोहित को उपहार में दिया बल्ला

एजेंसी

मुम्बई । बांग्लादेश के क्रिकेटर मेहदी हसन मिराज ने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा को एक बल्ला भेंट किया है। मिराज ने पिछले साल इमरुल कायस और अपने दूसरे दोस्तों के साथ मिलकर क्रिकेट के बल्ले बनाने का कारोबार शुरू किया था। इसी कारण टेस्ट सीरीज समाप्त होने के बाद इस ऑलराउंडर ने रोहित को उपहार के तौर पर एक बल्ला दिया। फेसबुक पेज पर जारी एक वीडियो में मेहदी ने कहा कि वह हमेशा से ही रोहित को तोहफे के तौर पर एक बल्ला उपहार में देना चाहते थे। इस अवसर पर मिराज ने कहा कि उन्हें रोहित को बल्ला उपहार में देकर खुशी हई है।

मेहदी ने कहा,मैं रोहित भाई के साथ हूं और मैंने उन्हें अपनी कंपनी का एक बल्ला उपहार में दे रहा हूं। मैं हमेशा से उन्हें एक बल्ला उपहार में देना चाहता था। इससे मुझे बेहद खुशी हुई है। वहीं रोहित ने कहा कि उन्हें मेहदी को अपना व्यवसाय करते देख खुशी हुई है और मैं उन्हें इसमें सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं। रोहित ने कहा, मैं मेहदी को लंबे समय से जानता हूं। वह बहुत अच्छे क्रिकेटर हैं। और मुझे उन पर बहुत गर्व है कि उन्होंने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर अपनी कंपनी शुरू की है। मुझे उम्मीद है कि यह कंपनी आगे बढ़ती जाएगी। मेहदी हसन मिराज कानपुर टेस्ट में बांग्लादेश के सबसे सफल गेंदबाज थे।

शार्दुल ठाकुर हुए बीमार, अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली । ईरानी कप खेल रहे मुम्बई के तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर को तबियत खराब होने के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शार्दुल की डेंगू और मलेरिया के लिए जांच की गयी है जिसकी रिपोर्ट अभी आनी है। शार्दुल ने पहली पारी में शेष भारत के खिलाफ 59 गेंदों में 36 रन बनाये थे। इस दौरान उन्होंने 4 चौके और 1 छक्का भी लगाया था। शार्दुल को सुबह से ही अच्छा महसूस नहीं हो रहा था फिर भी वह खेलते रहे। उन्हें कमजोर भी लग रही थी। वह दवाई लेकर ड्रेसिंग रूम में आराम कर रहा था और बल्लेबाजी के लिए उतरना चाहता था पर टीम प्रबंधन ने इंकार करते हुए उसे अस्पाल में दिखाया। जांच के बाद इस तेज गेंदबाज को अस्पताल में भर्ती कर लिया

सीपीएल के फाइनल में पहुंची सेंट लूसिया किंग्स

एजेंसी

जॉर्ज टाउन। सेंट लूसिया किंग्स ने प्रोविडेंस के गुयाना नेशनल स्टेडियम में मौसम बाधित मैच में मौजूदा चैंपियन गुयाना अमेजॅन वॉरियर्स पर 15 रन की जीत के साथ 2024 रिपब्लिक बैंक कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) फाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली। वॉरियर्स अब शुक्रवार को बारबाडोस रॉयल्स से भिड़ेगा और उस मैच का विजेता रविवार को किंग्स के साथ फाइनल में भिड़ेगा। मैच में किंग्स ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। फाफ डु प्लेसिस ने एक बार फिर अपनी टीम के लिए आगे बढ़कर नेतृत्व किया। उनके और जॉनसन चार्ल्स के बीच 124 रनों की शुरूआती साझेदारी हुई जिसकी बदौलत किंग्स अपने बीस ओवरों में 198/5 का चुनौतीपूर्ण स्कोर खड़ा किया। चार्ल्स 45 गेंदों में 79 रन बनाकर मोईन अली की गेंद पर कीमो पॉल द्वारा लॉन्ग ऑन बाउंड्री पर लपके गए। इसके बाद डु प्लेसिस अपने अच्छे अर्धशतक से चूक गए, किंग्स के कप्तान को शमर जोसेफ की गेंद पर रहमानुल्लाह गुरबाज ने बेहतरीन कैच पकड़कर पवेलियन भेजा। इसके बाद वॉरियर्स के गेंदबाजों ने बेहतरीन वापसी की और एक समय 200 के पार बढ़ रहे किंग्स के स्कोर को198 रन पर रोक दिया। मोईन अली ने एक बार फिर गेंद से बेहतरीन प्रदर्शन किया, उन्होंने अपने चार ओवरों में 24 रन देकर 2 विकेट लिए। जवाब में, वॉरियर्स 13वें ओवर की समाप्ति पर 106/4 पर पहुंच गया था, इसके बाद बूंदाबांदी शुरू हो गई जो जल्द ही भारी बारिश में बदल गई बारिश न रुकने पर मैच एक घंटे से अधिक समय बाद रद्द कर दिया गया। जब मौसम ने हस्तक्षेप किया तो वॉरियर्स को शेष 42 गेंदों पर 92 रनों की आवश्यकता थी, शिमरोन हेटमायर 18 गेंदों में 37 रन बनाकर खतरनाक दिख रहे थे और मोइन अली भी उनके साथ शामिल हुए थे। हेटमायर ने नूर अहमद और रोस्टन चेज की गेंदों पर लगातार छक्के लगाए, हालांकि उनकी इस पारी के बावजूद के वॉरियर्स 121 के आवश्यक डीएलएस स्कोर से पीछे थी। वॉरियर्स के पास शुक्रवार शाम को अंतिम एलिमिनेटर मैच में बारबाडोस रॉयल्स की जीत के साथ दोबारा फाइनल में जगह बनाने का मौका होगा। सेंट लूसिया किंग्स रविवार के फाइनल में दोनों टीमों में से किसी एक का इंतजार करेगी, जिसकी नजर उद्घाटन सीपीएल खिताब पर होगी।

हमें जडेजा से निपटना सीखना होगा : स्मिथ

एजेंसी

सिडनी । भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच इस साल के अंत में होने वाली बॉडर गावस्कर टेस्ट सीरीज की तैयारी में लगे अनुभवी बल्लेबाज स्टीव स्मिथ ने कहा है कि उनकी टीम को भारतीय टीम के स्पिन ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा से निपटना सीखना होगा। स्मिथ के अनुसार जडेजा अपनी आक्रामक बल्लेबाजी , गेंदबाजी और क्षेत्ररक्षण क्षमताओं के कारण मुश्किलें पैदा करते हैं। स्मिथ ने कहा, मैं मैदान पर जडेजा से परेशान हो जाता हूं क्योंकि वह एक बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं। वह हमेशा हमारी परेशानी बढ़ाने का कोई न कोई तरीका तलाश लेते हैं। चाहे वह तेजी से रन बनाना हो, विकेट लेना हो या शानदार कैच लेना हो। ये हमारे लिए परेशानी पर वह वह एक बहुत अच्छे खिलाड़ी हैं जिनके होने से मैदान पर रोमांच बना रहता है। वहीं ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड भी स्मिथ से सहमत है। उन्होंने कहा कि जडेजा हर क्षेत्र में कुशल है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हुए 17 टेस्ट मैचों में जडेजा ने 23 पारियों में 28.50 की औसत से 570 रन बनाए हैं जिसमें पांच अर्द्धशतक रहे हैं जबकि उनका सबसे अधिक स्कोर 81 रन रहा है। ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने पांच पारियों में 43.75 की औसत से 175 रन बनाए हैं, जिसमें दो अर्द्धशतक शामिल हैं। उन्होंने टेस्ट मैचों में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ कुल 89 विकेट लिए हैं जिनमें से 14 ऑस्ट्रेलिया में लगाये हैं। वहीं बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन के अनुसार उसे भारतीय बल्लेबाज ऋषभ पंत अपने मजाकिया स्वभाव के कारण अच्छा लगता है। लाबुशेन ने कहा कि वह हमेशा मजाकिया रहता है, खूब हंसता है और खेल को सही भावना से खेलता है।

सविता ने की हॉकी इंडिया के प्रतिबद्धता की सराहना

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी गोलकीपर और पूर्व कप्तान सविता पुनिया ने हॉकी इंडिया की समग्र रूप से लैंगिक समानता के प्रति प्रतिबद्धता और आगामी हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) 2024-25 की सराहना की है।

एचआईएल के इतिहास में पहली बार, इस टूनार्मेंट में न केवल पुरुष टीमें बल्कि महिला टीमें भी भाग लेंगी, जिसमें दोनों श्रेणियों को समान महत्व दिया जाएगा।

एचआईएल 2024-25 दिसंबर 2024 के अंतिम सप्ताह से फरवरी 2025 के पहले सप्ताह तक अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) द्वारा स्वीकृत अवधि में आयोजित किया जाएगा। इस टूनार्मेंट में 8 पुरुष टीमें और 6 महिला टीमें भाग लेंगी। विशेष रूप से, पुरुष और महिला एचआईएल एक साथ चलेंगे, जो वैश्विक खेल लीगों में एक अनूठा क्षण होगा।

सविता ने इस पहल की प्रशंसा करते हुए हॉकी इंडिया के हवाले से कहा, पुरुष और महिला एचआईएल एक साथ चलेंगे, जो कि मुझे नहीं लगता कि किसी अन्य खेल में पहले कभी हुआ है। हॉकी इंडिया ने हमेशा सुनिश्चित किया है कि पुरुष और महिला दोनों टीमों के साथ समान व्यवहार किया जाए। उदाहरण के लिए, जब पुरुष और महिला टीमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मैच या प्रतियोगिता जीतती हैं, तो दोनों के लिए पुरस्कार राशि समान होती है। यह खेलों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए हॉकी इंडिया के समर्पण के बारे में बहुत कुछ बताता है। एक खिलाड़ी के रूप में, एक ऐसे संगठन का हिस्सा बनना सशक्त महसूस होता है जो महिला एथलीटों के योगदान को उनके पुरुष समकक्षों जितना ही महत्व देता है।

राष्ट्रीय टेनिस चैम्पियनशिप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे विष्णु, माया

एजेंसी

नई दिल्ली। एशियाई खेलों के पदक विजेता विष्णु वर्धन और युवा माया रेवती ने बुधवार को नई दिल्ली के डीएलटीए कॉम्प्लेक्स में चल रहे 29वें फेनेस्टा ओपन नेशनल टेनिस चैंपियनशिप के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

शीर्ष वरीयता प्राप्त और पूर्व राष्ट्रीय चैंपियन विष्णु को मणिपुर के भिक्की सागोलशेम के खिलाफ अपने दूसरे दौर के मैच में कड़ी मेहनत करनी पड़ी और अंततः उन्होंने 6-3, 5-7, 6-2 से जीत हासिल की। ??तेलंगाना के खिलाड़ी ने जोरदार शुरूआत की, भिक्की की सर्विस दो बार तोड़कर 5-1 की बढ़त ले ली। भिक्की ने लगातार दो गेम जीतकर वापसी की और पहला सेट जीवंत रखा। हालांकि, विष्णु ने पहला सेट जीतने के लिए अपने अनुभव का इस्तेमाल किया। दूसरे सेट में कड़ी टक्कर देखने को मिली, स्कोर 5-5 से बराबर था, लेकिन भिक्की ने अपने खेल को बेहतर बनाते हुए अगले दो गेम जीतकर मैच को बराबर कर दिया। अंतिम सेट में विष्णु ने दबदबा बनाते हुए 6-2 से जीत दर्ज की। महिला एकल में तमिलनाडु की युवा माया ने तेलंगाना की सौम्या रोंडे को हराकर एक और दमदार प्रदर्शन किया। 15 वर्षीय माया, जिनके नाम आईटीएफ जूनियर्स में लगातार सबसे लंबे समय तक जीत का रिकॉर्ड है, ने पूरे नियंत्रण में रहते हुए सीधे सेटों में 6-3, 6-0 से जीत दर्ज की। पिछले साल की फाइनलिस्ट गुजरात की वैदेही चौधरी ने दिल्ली की रिया सचदेवा को 6-0, 6-0 से हराकर अंतिम आठ में जगह बनाई, जबकि अनुभवी खिलाड़ी रिया भाटिया ने झारखंड की नेमहा किस्पोट्टा को सीधे सेटों में 6-2, 6-2 से हराया। डीसीएम श्रीराम लिमिटेड द्वारा समर्थित और अखिल भारतीय टेनिस संघ और दिल्ली लॉन टेनिस संघ के तत्वावधान में आयोजित भारत का सबसे बड़ा घरेलू टेनिस टूनार्मेंट देश भर की प्रतिभाओं को सामने ला रहा है। टूनार्मेंट के पिछले संस्करणों में भारत के कुछ शीर्ष टेनिस सितारे शामिल हो चुके हैं, जिनमें रोहन बोपन्ना, सोमदेव देववर्मन, युकी भांबरी, सानिया मिर्जा और रुतुजा भोसले शामिल हैं। पुरुष एकल में कुछ आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले, जैसे नितिन कुमार सिन्हा (आरएसपीबी) ने ओडिशा के चौथे वरीय कबीर हंस को 7-6(5), 6-2 से हराया और मणिपुर के बुशन हाओबाम ने तमिलनाडु के छठे वरीय रंजीत वीएम को 6-1, 6-3 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

गुजरात के स्मित पटेल (9वीं वरीयता प्राप्त) ने लड़कों के अंडर-18 एकल में अपनी जीत का सिलसिला बरकरार रखते हुए चंडीगढ़ के आठवीं वरीयता प्राप्त अक्षत ढुल को तीसरे दौर में 7-5, 6-0 से हराया। लड़कियों के अंडर-18 एकल में, महाराष्ट्र की सेजल भुटाडा (14वीं वरीयता प्राप्त) ने शीर्ष वरीयता प्राप्त लक्ष्मी डांडू को तीन सेटों के रोमांचक मुकाबले में 6-4, 5-7, 6-4 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

बीजिंग में चीन ओपन टेनिस में जीत के बाद स्पेन के कार्लोस अल्कराज व रनर अप जैनिक सिनर ट्रॉफी दिखाते हुए।

खास खबर

यूनान ने जीता टी10 खिताब

एथेंस । यूनान ने पहली बार यूरोपीय क्रिकेट चैंपियनशिप टी10 का खिताब जीत लिया है। अंतिम ओवर में उसके बल्लेबाज पाकिस्तानी मूल के साजिद अफरीदी ने इस्टोनिया के खिलाफ 28 रन बनाकर अपनी टीम को जीत दिला दी। यूनान को इस खिताब मुकाबले की जीत के लिए अंतिम 6 गेंद पर जीत के लिए 28 रनों की जरूरत थी। साजिद ने प्रणय घीवाला की गेंदों पर चौके, छक्के लगाकर अपनी टीम को लक्ष्य तक पहुंचा दिया। साजिद ने तीन छक्के और दो चौके मारे। इस शानदार जीत के बाद साथी खिलाड़ियों ने उसे अपने कंधे पर उठा लिया। यूनान ने पहली बार यूरोपियन टी10 का खिताब जीता है। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए इस्टोनिया की टीम ने 3 विकेट पर 175 रन बनाए थे। साहिल चौहान ने 28 गेंदों पर 109 रनों की पारी खेली।

वेस्टइंडीज दौरे लिए बटलर होंगे कप्तान : ईसीबी

लंदन। इंग्लैंड व वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने इसी माह के अंत में होने वाले वेस्टइंडीज दौरे के लिए जोस बटलर को कप्तान बनाया है। ईसीबी ने कहा है कि बटलर अब फिट हो गये हैं और टीम की कप्तानी के लिए तैयार हैं। इसके अलावा अनकैप्ड युवा लेग स्पिनर जाफर चौहान को भी टीम में शामिल किया है। बटलर पिंडली की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज में शामिल नहीं थे। उनकी अनुपस्थिति में फिल साल्ट और हैरी ब्रुक ने टी20 और वनडे टीमों की अगुआई की थी। जाफर चौहान ने 23 टी20 मैच खेले हैं पर अभी तक लिस्ट ए मुकाबला नहीं खेला है। वहीं जॉन टर्नर और डैन मूसली भी अन्य अनकैप्ड खिलाड़ी हैं। ये दोनों ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में भी शामिल थे पर इन्हें किसी मैच में जगह नहीं मिली थी। इंग्लैंड टीम 31 अक्टूबर से वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन एकदिवसीय और पांच टी20 मैच खेलेगी।

दक्षिण अफ्रीका ने आयरलैंड को हराया

जोहांसबर्ग । दक्षिण अफ्रीका ने आयरलैंड को दूसरे एकदिवसीय क्रिकेट मैच में हराकर तीन मैचों की सीरीज में 2-0 की बढ़त हासिल कर ली है। इस मैच में दक्षिण अफ्रीकी टीम ने 139 रनों से जीत हासिल की। इस मैच में दक्षिण अफ्रीकी टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए शुरूआत में ही 39 रनों पर तीन विकेट खो दिए। इसके बाद रेयान रिकल्टन और ट्रिस्टन स्टब्स ने अफ्रीकी टीम को संभाला। नये बल्लेबाज रेयान रिकल्टन ने 102 गेंदों में ही 91 रन बना दिये। वहीं ट्रिस्टन स्टब्स ने भी 79 रनों की पारी खेली। इन दोनों ने चौथे विकेट के लिए 152 रन बनाकर अपनी टीम को बेहतर हालातों में पहुंचाया। वहीं ब्योर्न फोर्टयून ने 28 और लुंगी एंगिडी ने 20 रन बनाये। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीकी टीम ने 9 विकेट पर 271 रन बनाए। जीत के लिए मिले 272 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए आयरलैंड की टीम 31.2 ओवरों में 132 रन ही बना पायी।

जयविक्रमा पर लगा एक साल का प्रतिबंध

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने श्रीलंका के बाएं हाथ के स्पिनर प्रवीण जयविक्रमा पर एक वर्ष के लिए सभी प्रकार के क्रिकेट से प्रतिबंध लगा दिया है, जिसमें से अंतिम छह महीने निलंबित हैं, क्योंकि उन्होंने वैश्विक संस्था की भ्रष्टाचार रोधी संहिता का उल्लंघन करने की बात स्वीकार की है। अगस्त में आईसीसी ने जयविक्रमा पर संहिता के दो उल्लंघनों का आरोप लगाया। उन्होंने अनुच्छेद 2.4.7 का उल्लंघन करना स्वीकार किया है, जो एसीयू [भ्रष्टाचार निरोधक इकाई] द्वारा की जा रही किसी भी जांच में बाधा डालना या देरी करना, जिसमें किसी भी दस्तावेज या अन्य जानकारी को छिपाना, छेड़छाड़ करना या नष्ट करना शामिल है जो उस जांच के लिए प्रासंगिक हो सकती है और/या जो सबूत हो सकती है या भ्रष्टाचार निरोधक संहिता के तहत भ्रष्ट आचरण के सबूत की खोज का कारण बन सकती है, से संबंधित है।

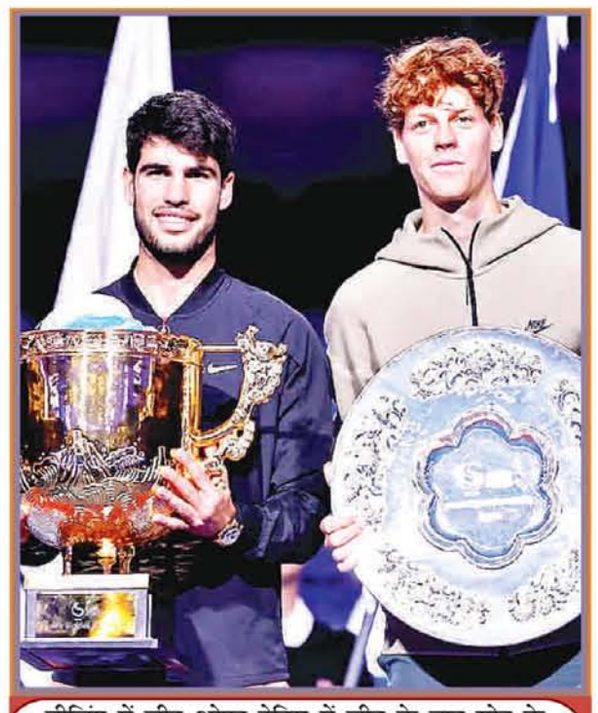

देश का इकलौता ब्रह्मा मंदिर

पुष्कर को तीर्थों का मुख माना जाता है। जिस प्रकार प्रयाग को तीर्थराज कहा जाता है, उसी प्रकार से इस तीर्थ को पुष्करराज कहा जाता है। पुष्कर की गणना पंचतीर्थों व पंच सरोवरों में की जाती है।

पुष्कर सरोवर तीन हैं

ज्येष्ठ (प्रधान) पुष्कर

मध्य (बूढ़ा) पुष्कर

कनिष्क पुष्कर

ज्येष्ठ पुष्कर के देवता ब्रह्माजी, मध्य पुष्कर के देवता भगवान विष्णु और कनिष्क पुष्कर के देवता रुद्र हैं। पुष्कर का मुख्य मन्दिर ब्रह्माजी का मन्दिर है। जो कि पुष्कर सरोवर से थोड़ी ही दूरी पर स्थित है। मन्दिर में चतुर्मुख ब्रह्मा जी की दाहिनी ओर सावित्री एवं बायीं ओर गायत्री का मन्दिर है। पास में ही एक और सनकादि की मूर्तियाँ हैं, तो एक छोटे से मन्दिर में नारद जी की मूर्ति। एक मन्दिर में हथी पर बैठे कुबेर तथा नारद की मूर्तियाँ हैं।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में उल्लिखित है कि अपने मानस पुत्र नारद द्वारा सृष्टिकर्म करने से इन्कार किए जाने पर ब्रह्मा ने उन्हें रोषपूर्वक शाप दे दिया कि-तुमने मेरी आज्ञा की अवहेलना की है, अत: मेरे शाप से तुम्हारा ज्ञान नष्ट हो जाएगा और तुम गन्धर्व योनि को प्राप्त करके कामिनियों के वशीभूत हो जाओगे। तब नारद ने भी दु:खी पिता ब्रह्मा को शाप दिया-तात! आपने बिना किसी कारण के सोचे - विचारे मुझे शाप दिया है। अत: मैं भी आपको शाप देता हूँ कि तीन कल्पों तक लोक में आपकी पूजा नहीं होगी और आपके मंत्र, श्लोक कवच आदि का लोप हो जाएगा। तभी से ब्रह्मा जी की पूजा नहीं होती है। मात्र पुष्कर क्षेत्र में ही वर्ष में एक बार उनकी पूजाङ्कअर्चना होती है।

पूरे भारत में केवल एक यही ब्रह्मा का मन्दिर है। इस मन्दिर का निर्माण ग्वालियर के महाजन गोकुल प्राक् ने अजमेर में करवाया था। ब्रह्मा मन्दिर की लाट लाल रंग की है तथा इसमें ब्रह्मा के वाहन हंस की आकृतियाँ हैं। चतुर्मुखी ब्रह्मा देवी गायत्री तथा सावित्री यहाँ मूर्तिरूप में विद्यमान हैं। हिन्दुओं के लिए पुष्कर एक पवित्र तीर्थ व महान पवित्र स्थल है। वर्तमान समय में इसकी देख-रेख की व्यवस्था सरकार ने सम्भाल रखी है। अत: तीर्थस्थल की स्वच्छता बनाए रखने में भी काफ़ी मदद मिली है। यात्रियों की आवास व्यवस्था का विशेष ध्यान रखा जाता है। हर तीर्थयात्री, जो यहाँ आता है, यहाँ की पवित्रता और सौंदर्य की मन में एक याद संजोए जाता है।

ऐसे पहुंचे पुष्कर

अजमेर पहुँचने के लिए सबसे बेहतर विकल्प रेल मार्ग है। दिल्ली से दिल्ली-अहमदाबाद एक्सप्रेस द्वारा आसानी से अजमेर पहुँचा जा सकता है। रेलमार्ग के अलावा राष्ट्रीय राजमार्ग 8 से निजी वाहन द्वारा भी बेहरोड और जयपुर होते हुए अजमेर पहुँचा जा सकता है।

कुम्भलगढ़ दुर्ग

कुम्भलगढ़ दुर्ग का विशालकाय द्वार इसे राम पोल कहा जाता है।

कुम्भलगढ़ का दुर्ग राजस्थान ही नहीं भारत के सभी दुर्गों में विशिष्ट स्थान रखता है। उदयपुर से 70 किमी दूर समुद्र तल से 1,087 मीटर ऊँचा और 30 किमी व्यास में फैला यह दुर्ग मेवाड़ के यशश्वी महाराणा कुम्भा की सूझबूझ व प्रतिभा का अनुपम स्मारक है। इस दुर्ग का निर्माण सम्राट अशोक के द्वितीय पुत्र संप्रति के बनाये दुर्ग के अवशेषों पर 1443 से शुरू होकर 15 वर्षों बाद 1458 में पूरा हुआ था। दुर्ग का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर महाराणा कुम्भा ने सिक्के डलवाये जिन पर दुर्ग और उसका नाम अंकित था। वास्तुशास्त्र के नियमानुसार बने इस दुर्ग में प्रवेश द्वार, प्राचीर, जलाशय, बाहर जाने के लिए संकटकालीन द्वार, महल, मंदिर, आवासीय इमारतें, यज्ञ वेदी, स्तम्भ, छत्रियां आदि बने है।

बादल महल

यह किला राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित है। इस दुर्ग का निर्माण महाराणा कुम्भा ने कराया था। इस किले को %अजेयगढ% कहा जाता था क्योंकि इस किले पर विजय प्राप्त करना दुष्कर कार्य था। इसके चारों ओर एक बडी दीवार बनी हुई है जो चीन की दीवार के बाद दूसरी सबसे बडी दीवार है। यह दुर्ग कई घाटियों व पहाड़ियों को मिला कर बनाया गया है जिससे यह प्राकृतिक सुरक्षात्मक आधार पाकर अजेय रहा। इस दुर्ग में ऊँचे स्थानों पर महल, मंदिर व आवासीय इमारते बनायीं गई और समतल भूमि का उपयोग कृषि कार्य के लिए किया गया। वहीं ढलान वाले भागो का उपयोग जलाशयों के लिए कर इस दुर्ग को यथासंभव स्वाबलंबी बनाया गया। इस दुर्ग के भीतर एक और गढ़ है जिसे कटारगढ़ के नाम से जाना जाता है। यह गढ़ सात विशाल द्वारों व सुदृढ़ प्राचीरों से सुरक्षित है। इस गढ़ के शीर्ष भाग में बादल महल है व कुम्भा महल सबसे ऊपर है।

महाराणा प्रताप की जन्म स्थली कुम्भलगढ़ एक तरह से मेवाड़ की संकटकालीन राजधानी रहा है। महाराणा कुम्भा से लेकर महाराणा राज सिंह के समय तक मेवाड़ पर हुए आक्रमणों के समय राजपरिवार इसी दुर्ग में रहा। यहीं पर पृथ्वीराज और महाराणा सांगा का बचपन बीता था। महाराणा उदय सिंह को भी पन्ना धाय ने इसी दुर्ग में छिपा कर पालन पोषण किया था। हल्दी घाटी के युद्ध में हार के बाद महाराणा प्रताप भी काफी समय तक इसी दुर्ग में रहे। इस दुर्ग के बनने के बाद ही इस पर आक्रमण शुरू हो गए लेकिन एक बार को छोड़ कर ये दुर्ग प्राय: अजेय ही रहा है लेकिन इस दुर्ग की कई दुखांत घटनाये भी है जिस महाराणा कुम्भा को कोई नहीं हरा सका वही परमवीर महाराणा कुम्भा इसी दुर्ग में अपने पुत्र उदय कर्ण द्वारा राज्य लिप्सा में मारे गए। कुल मिलाकर दुर्ग ऐतिहासिक विरासत की शान और शूरवीरों की तीर्थ स्थली रहा है। माड गायक इस दुर्ग की प्रशंसा में अक्सर गीत गाते है=

कुम्भलगढ़ कटारगढ़ पाजिज अवलन फेर।
संवली मत दे साजना, बसुंज, कुम्भल्मेर॥

सात दरवाज़े

चित्तौड़गढ़ के सात सात दरवाज़े बहुत प्रसिद्ध हैं। इन दरवाज़ों के नाम हैं—पद्मपोल, भैरवपोल, हनुमानपोल, गणेशपोल, जोठलापोल और रामपोल। भैरवपोल के पास जयमल और कल्ला राठौर के स्मारक हैं। पत्ता का स्मारक भी पास ही है। रामपोल के ही निकट पलालेश्वर है, जहाँ राणा सांगा की कई तोपे रखी हैं। निकटस्थ शांतिनाथ के जैन मन्दिर को बहादुरशाह ने विध्वंस कर दिया था। वीरांगना पन्ना धाय का महल रानीमहल के निकट ही है। पन्नामहल ही में पन्ना के अपूर्व बलिदान की प्रसिद्ध कथा घटित हुई थी। राणा कुम्भा का बनवाया हुआ जटाशंकर नामक मन्दिर भी पास ही स्थित है। भैरवपोल, रामपोल और हनुमानपोल द्वारों की रचना महाराणा कुम्भा ने ही की थी।

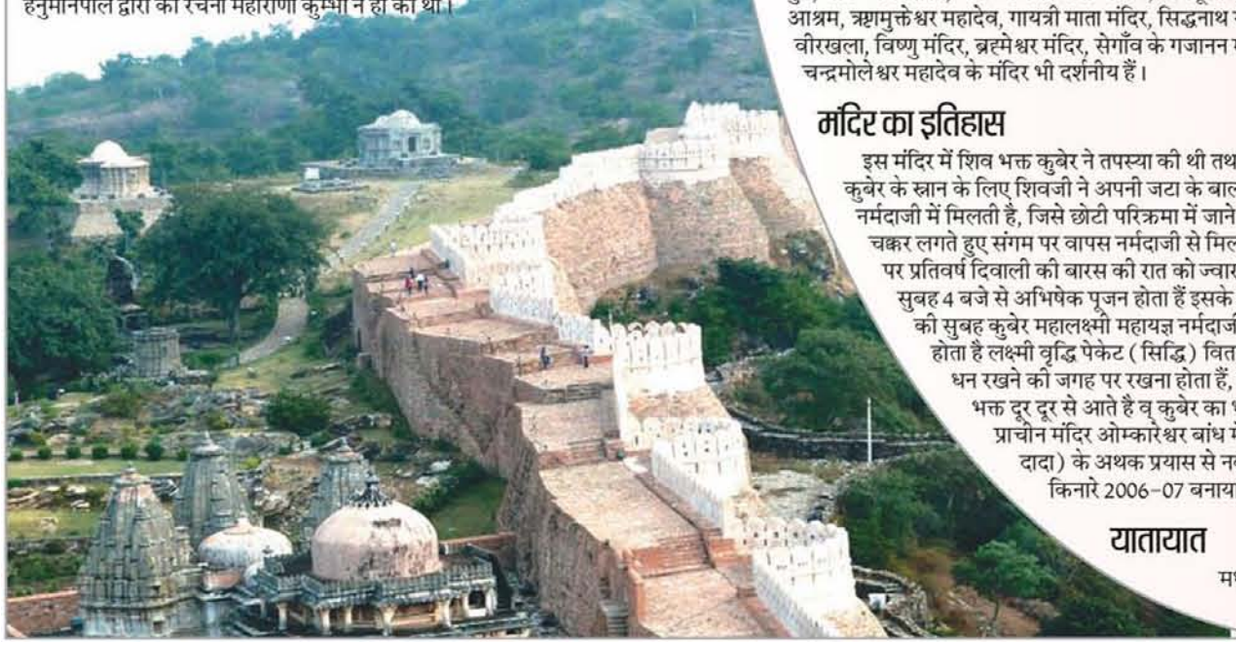

बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वर एक हिन्दू मंदिर है। यह मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित है। यह नर्मदा नदी के बीच मन्धाता या शिवपुरी नामक द्वीप पर स्थित है। यह भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगओं में से एक है। यह यहां के मोरटक्का गांव से लगभग 12 मील (20 कि.मी.) दूर बसा है। यह द्वीप हिन्दू पवित्र चिन्ह ऊं के आकार में बना है। यहां दो मंदिर स्थित हैं। ओंकारेश्वर का निर्माण नर्मदा नदी से स्वत: ही हुआ है। यह नदी भारत की पवित्रतम नदियों में से एक है और अब इस पर विश्व का सर्वाधिक बड़ा बांध परियोजना का निर्माण हो रहा है।

इतिहास

देवी अहिल्याबाई होलकर की ओर से यहाँ नित्य मृत्तिका के 18 सहस्र शिवलिंग तैयार कर उनका पूजन करने के पश्चात उन्हें नर्मदा में विसर्जित कर दिया जाता है। ओंकारेश्वर नगरी का मूल नाम मान्धाता है।

कथा

राजा मान्धाता ने यहाँ नर्मदा किनारे इस पर्वत पर घोर तपस्या कर भगवान शिव को प्रसन्न किया और शिवजी के प्रकट होने पर उनसे यहीं निवास करने का वरदान माँग लिया। तभी से उक्त प्रसिद्ध तीर्थ नगरी ओंकार-मान्धाता के रूप में पुकारी जाने लगी। जिस ओंकार शब्द का उच्चारण सर्वप्रथम सृष्टिकर्ता विधाता के मुख से हुआ, वेद का पाठ इसके उच्चारण किए बिना नहीं होता है। इस ओंकार का भौतिक विग्रह ओंकार क्षेत्र है। इसमें 68 तीर्थ हैं। यहाँ 33 करोड़ देवता परिवार सहित निवास करते हैं।

मान्यता

नर्मदा क्षेत्र में ओंकारेश्वर सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है। शास्त्र मान्यता है कि कोई भी तीर्थयात्री देश के भले ही सारे तीर्थ कर ले किन्तु जब तक वह ओंकारेश्वर आकर किए गए तीर्थों का जल लाकर यहाँ नहीं चढ़ाता उसके सारे तीर्थ अधूरे माने जाते हैं। ओंकारेश्वर तीर्थ के साथ नर्मदाजी का भी विशेष महत्व है। शास्त्र मान्यता के अनुसार जमुनाजी में 15 दिन का स्नान तथा गंगाजी में 7 दिन का स्नान जो फल प्रदान करता है, उतना पुण्यफल नर्मदाजी के दर्शन मात्र से प्राप्त हो जाता है। ओंकारेश्वर तीर्थ क्षेत्र में चौबीस अवतार, माता घाट (सेलानी), सीता वाटिका, धावड़ी कुंड, मार्कण्डेय शिला, मार्कण्डेय संन्यास आश्रम, अन्नपूर्णाश्रम, विज्ञान शाला, बड़े हनुमान, खेड़ापति हनुमान, ओंकार मठ, माता आनंदमयी आश्रम, ऋणमुक्तेश्वर महादेव, गायत्री माता मंदिर, सिद्धनाथ गौरी सोमनाथ, आड़े हनुमान, माता वैष्णोदेवी मंदिर, चाँद-सूरज दरवाजे, वीरखला, विष्णु मंदिर, ब्रह्मेश्वर मंदिर, सेगाँव के गजानन महाराज का मंदिर, काशी विश्वनाथ, नरसिंह टेकरी, कुबेरेश्वर महादेव, चन्द्रमोलेश्वर महादेव के मंदिर भी दर्शनीय हैं।

मंदिर का इतिहास

इस मंदिर में शिव भक्त कुबेर ने तपस्या की थी तथा शिवलिंग की स्थापना की थी। जिसे शिव ने देवताओ का धनपति बनाया था ङ्क कुबेर के स्नान के लिए शिवजी ने अपनी जटा के बाल से कावेरी नदी उत्पन्न की थी ङ्क यह नदी कुबेर मंदिर के बाजू से बहकर नर्मदाजी में मिलती है, जिसे छोटी परिक्रमा में जाने वाले भक्तो ने प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में देखा है, यही कावेरी ओमकार पर्वत का चक्कर लगते हुए संगम पर वापस नर्मदाजी से मिलती हैं, इसे ही नर्मदा कावेरी का संगम कहते है ङ्क स धनतेरस पूजन स इस मंदिर पर प्रतिवर्ष दिवाली की बारस की रात को ज्वार चढाने का विशेष महत्त्व है इस रात्रि को जागरण होता है तथा धनतेरस की सुबह 4 बजे से अभिषेक पूजन होता हैं इसके पश्चात् कुबेर महालक्ष्मी का महायज्ञ, हवन, (जिसमे कई जोड़े बैठते हैं, धनतेरस की सुबह कुबेर महालक्ष्मी महायज्ञ नर्मदाजी का तट और ओम्कारेश्वर जैसे स्थान पर होना विशेष फलदायी होता हैं) भंडारा होता है लक्ष्मी वृद्धि पेकेट (सिद्धि) वितरण होता है, जिसे घर पर ले जाकर दीपावली की अमावस को विधि अनुसार धन रखने की जगह पर रखना होता हैं, जिससे घर में प्रचुर धन के साथ सुख शांति आती हैं ङ्क इस अवसर पर हजारों भक्त दूर दूर से आते है व् कुबेर का भंडार प्राप्त कर प्रचुर धन के साथ सुख शांति पाते हैं ङ्क स नवनिर्मित मंदिर स प्राचीन मंदिर ओम्कारेश्वर बांध में जलमग्न हो जाने के कारण भक्त श्री चैतरामजी चौधरी, ग्राम - कातोरा (गुर्जर दादा) के अथक प्रयास से नवीन मंदिर का निर्माण बांध के व् ममलेश्वर ज्योतिर्लिंग के बीच नर्मदाजी के किनारे 2006-07 बनाया गया हैं ङ्क

यातायात

मध्यप्रदेश के खंडवा से ओंकारेश्वर 72 कि.मी. बस अथवा टैक्सी से जा सकते है।

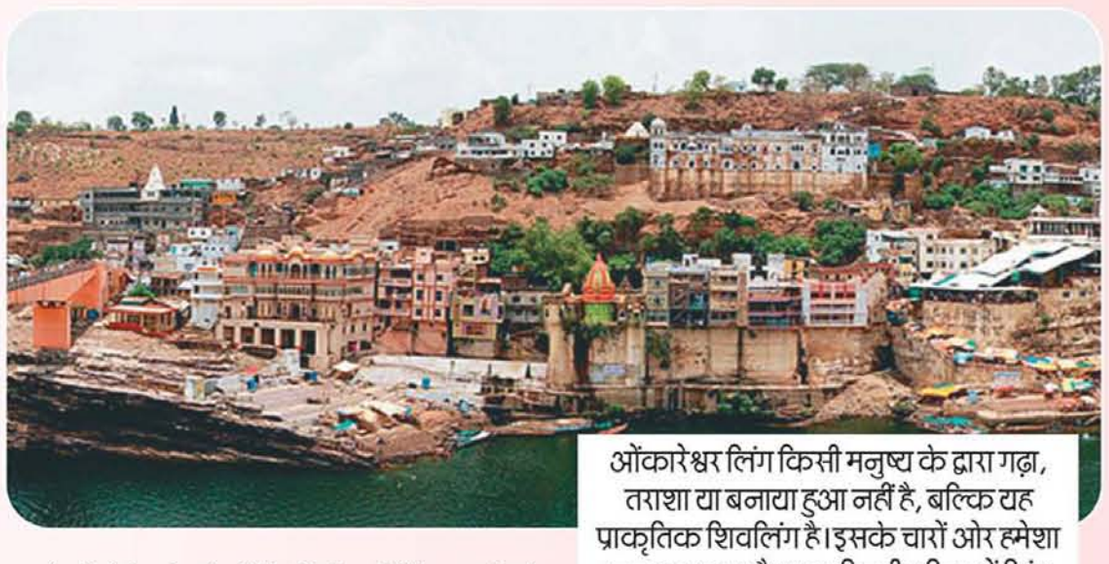

ओंकारेश्वर लिंग किसी मनुष्य के द्वारा गढ़ा, तराशा या बनाया हुआ नहीं है, बल्कि यह प्राकृतिक शिवलिंग है। इसके चारों ओर हमेशा जल भरा रहता है। प्राय: किसी मन्दिर में लिंग की स्थापना गर्भ गृह के मध्य में की जाती है और उसके ठीक ऊपर शिखर होता है, किन्तु यह ओंकारेश्वर लिंग मन्दिर के गुम्बद के नीचे नहीं है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि मन्दिर के ऊपरी शिखर पर भगवान महाकालेश्वर की मूर्ति लगी है। कुछ लोगों की मान्यता है कि यह पर्वत ही ओंकाररूप है। परिक्रमा के अन्तर्गत बहुत से मन्दिरों के विद्यमान होने के कारण भी यह पर्वत ओंकार के स्वरूप में दिखाई पड़ता है। ओंकारेश्वर के मन्दिर ओंकार में बने चन्द्र का स्थानीय ऊं इसमें बने हुए चन्द्रबिन्दु का जो स्थान है, वही स्थान ओंकारपर्वत पर बने ओंकारेश्वर मन्दिर का है। मालूम पड़ता है इस मन्दिर में शिव जी के पास ही माँ पार्वती की भी मूर्ति स्थापित है। यहाँ पर भगवान परमेश्वर महादेव को चने की दाल चढ़ाने की परम्परा है।

गलत मिसाल कायम करने से बचना चाहती थीं तनुश्री, छोड़ दी कई फिल्में

अभिनेत्री तनुश्री दत्ता ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान साझा किया कि किस तरह से उन्हें 'मीटू' के आरोपी द्वारा काम करने का प्रस्ताव मिला और उन्होंने इससे इनकार कर दिया। अभिनेत्री ने अपने मुखर होने की क्या कीमत चुकाई इस पर भी खुलकर अपनी बात रखी।

अभिनेत्री तनुश्री दत्ता बॉलीवुड में अपने अभिनय के लिए तो पहचानी जाती हैं, लेकिन फेमिना मिस इंडिया यूनिवर्स 2004 रह चुकी अभिनेत्री को मीटू आंदोलन के लिए भी जाना जाता है। अभिनेत्री ने बॉलीवुड में महिला कलाकारों के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई। हाल ही में अभिनेत्री ने साझा किया कि मीटू के आरोपी ने उन्हें एक परियोजना में काम करने के संपर्क किया था, लेकिन उन्होंने इसके लिए इनकार कर दिया। अभिनेत्री ने साझा किया कि वह उनके साथ काम करके अपनी छवि को साफ करना चाहते थें, लेकिन वह ऐसा करके कोई गलत मिसाल कायम नहीं करना चाहती थीं।

मुखर होने की चुकाई कीमत

हाल ही में अभिनेत्री ने बातचीत के दौरान मुखर होने की कीमत चुकाने के बारे में बात करते हुए कहा, जरूरत इस बात की है कि हर एक अभिनेता किसी मुद्दे के लिए थोड़ा त्याग करने को तैयार हो। दिसंबर 2018 में मुझे एक बहुत बड़े निर्माता ने एक फिल्म ऑफर की थी। उसने कुछ बेहतरीन फिल्में बनाई हैं। लेकिन उसके निर्देशक पर मीटू का आरोप था और मैंने तुरंत इसके लिए मना कर दिया। इस सौदे में कौन हार रहा है? मैंने बहुत लंबे समय से फिल्म में काम नहीं किया है।

छवि चमकाने के लिए दिया था ऑफर

अभिनेत्री ने आगे साझा किया कि पिछले साल भी उन्हें कोलकाता के एक फिल्म निर्देशक से प्रस्ताव मिला था, अभिनेत्री ने कहा कि उन्होंने उस ऑफर को इसी वजह से ठुकरा दिया क्योंकि उन्हें लगता है कि निर्देशक यौन दुराचार के आरोपों के बाद अपनी छवि को साफ करने के लिए उसके साथ काम करना चाहते थें। अभिनेत्री ने कहा, 'वह मेरे पास क्यों आए? उन्होंने सोचा कि मीटू को काफी समय हो गया है और अगर वह मुझे अपनी फिल्म में लेते हैं, तो यह धारणा बनेगी कि मैं उसका पक्ष ले रही हूं। वह मेरे माध्यम से अपनी छवि बदलना चाहते थें। अगर मैंने वह फिल्म की तो ऐसा लगेगा कि मीटू का नेता अब एक आरोपी का समर्थन कर रहा है। मैंने विनम्रता से मना कर दिया। इसमें एक एजेंसी शामिल थी। मैंने उनसे कहा कि मैं फिल्म को जाने देना चाहती हूं। मैंने इस मामले पर अपने पिता से भी सलाह ली और उन्होंने मुझसे कहा कि किसी ऐसे व्यक्ति के साथ फिल्म करना नैतिक रूप से सही नहीं होगा जो आरोपी है।' तनुश्री ने कहा कि उन्होंने तब त्याग किया जब उन्हें काम की जरूरत थी। अब, उन्हें उम्मीद है कि दूसरे लोग भी ऐसी ईमानदारी दिखा सकते हैं और बदलाव लाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

सोशल मीडिया पर ट्रोल्स के कॉमेंट्स पढ़ती ही नहीं

मालविका मोहनन वो पैन इंडिया स्टार हैं, जो दक्षिण और हिंदी दोनों ही इंडस्ट्रीज में एक्टिव हैं। बॉलिवुड में जाने-माने मशहूर निर्देशक माजिद मजीदी की फिल्म बियॉन्ड द क्लाउड्स में नजर आने वाली मालविका पिछले दिनों थंगलान और युद्धा से चर्चा में रहीं। जाने-माने सिनेमैटोग्राफर की बेटी मालविका उच्च शिक्षा पाने की राह पर थी कि एक दिन पिता के सेट पर उन्हें साउथ के सुपरस्टार ममूटी की तरफ से रोल ऑफर हुआ और उनकी जिंदगी बदल गई।

माजिद मजीदी की फिल्म बियॉन्ड द क्लाउड्स में तारीफ पाने के बावजूद आप हिंदी फिल्मों में ज्यादा नजर नहीं आईं? आपने साउथ की तरफ रुख कर लिया।

हमारी इंडस्ट्री का स्वभाव ऐसा है कि हम कोई पूर्व योजना बना कर अपना करियर आगे नहीं बढ़ा पाते। मेरे माता-पिता मलयाली हैं और मैं मुंबई में पली-बढ़ी हूं, तो मैंने मुंबई के साथ-साथ दूसरी फिल्मों को भी देखा है। मेरा ऐसा कुछ प्लान नहीं था कि मुझे किसी खास इंडस्ट्री में काम करना है। मेरी शुरुआत साउथ फिल्मों से हुई। मगर ऐसा नहीं है कि मेरे पास हिंदी से ऑफर नहीं आए। हिंदी फिल्मों के प्रस्ताव तो कई आए, मगर मैं भूमिकाओं के मामले में काफी सिलेक्टिव रही हूं। इस मामले में मैं चूजी ही रहना पसंद करती हूं। मगर अब मैं करियर के उस दौर में हूं, जहां मुझे जिस डायरेक्टर के साथ काम करना है या फिर जिस प्रॉजेक्ट का हिस्सा बनना है, वो मैं कर पा रही हूं। मुझे तेलुगू और हिंदी से भी ऑफर आ रहे हैं। मैं प्रभास के साथ अपना तेलुगू डेब्यू करने जा रही हूं। तेलुगू से मेरे पास कई फिल्मों के प्रस्ताव आए थे, मगर मैं यहां धमाकेदार एंट्री करना चाहती थी। अब मैं खुश हूं कि मुझे इंतजार का फल मीठा मिला। तमिल से मुझे अच्छी भूमिकाएं मिल रही हैं। हिंदी में भी मेरी फिल्म युद्धा हाल ही में रिलीज हुई। मेरी फिल्म थंगलान को भी काफी तारीफ मिली, तो मैं खुश हूं।

आप सोशल मीडिया पर काफी फेमस हैं, मगर कई बार ट्रोल्स पीछे पड़ जाते हैं, उन्हें कैसे हैंडल करती हैं?

हमारे जमाने में सोशल मीडिया एक पोर्टफोलियो की तरह बन गया है। आप यदि नए हैं और अपनी जमीन तलाश रहे हैं, तो सोशल मीडिया आपके लिए एक ऐसा माध्यम है, जहां आप लोगों को दिखा सकते हैं कि मैं ऐसी भी लग सकती हूं या फिर मैं ये भी कर सकती हूं। मेरे लुक्स की विविधता ऐसी है। अगर कोई नृत्य में माहिर है, तो वो सोशल मीडिया पर अपने डांस का विडियो डाल कर अपनी प्रतिभा को दर्शा सकता है। हर चीज के अपने फायदे और नुकसान दोनों होते हैं, तो इसका सबसे बड़ा नुकसान ट्रोलिंग ही होती है। मैं ट्रोल्स को इग्नोर करती हूं। मैं कॉमेंट्स पढ़ती ही नहीं हूं।

थंगलान में आपका लुक काफी अलग था। एक हीरोइन होने के नाते आपके लिए लुक कितना मायने रखता है?

मुझे अपने लुक को लेकर ऐसी कोई इनसिक्योरिटी नहीं थी कि मैं कैसी लगूंगी? अच्छी लगूंगी या बुरी। मैं कई फिल्में कर रही हूं और हर फिल्म में मेरा अलग लुक है। मैं ऐसी फिल्म भी कर रही हूं, जहां मेरा टिपिकल ग्लैमरस लुक है। लेकिन मुझे ऐसे एक प्रोजेक्ट की खोज थी, जहां मैं खुद को एक परफॉर्मर के रूप में पेश कर सकूं। आज के दौर में लंबे समय तक अपने करियर को बनाए रखने के लिए हम सिर्फ लुक्स पर निर्भर नहीं कर सकते। मैं ऐसी भूमिकाएं करने की इच्छुक हूं, जो दर्शकों के दिल में बस जाए।जब मुझे थंगलान की भूमिका का ऑफर मिला, तो मेरे मन डर जरा भी नहीं था कि मैं पर्दे पर कैसी लगूंगी। मैं तो रोल में अपना दम दिखाना चाह रही थी। किरदार को विश्वनीयता से निभाना मेरे लिए बहुत जरूरी था।

लव सितारा को मिली शानदार प्रतिक्रिया से गदगद हुईं शोभिता धुलिपाला

शोभिता धुलिपाला एक के बाद एक बेहतरीन प्रोजेक्ट्स से दर्शकों का दिल जीत रही हैं। इन दिनों वह अपनी हालिया रिलीज पारिवारिक ड्रामा लव, सितारा के लिए सुर्खियों में बनी हुई हैं। फिल्म की कहानी उनके किरदार के इर्द गिर्द घूमती है। अभिनेत्री ने इसमें एक आत्मनिर्भर इंटीरियर डिजाइनर सितारा की भूमिका निभाई है। प्रासंगिक भूमिकाओं को चुनने के उनके तरीके के बारे में पूछे जाने पर शोभिता ने स्पष्ट रूप से कहा कि वह भाग्यशाली हैं कि उन्हें सितारा जैसी भूमिका को निभाने का अवसर मिला। शोभिता धुलिपाला का मानना है कि वह अक्सर ऐसी भूमिकाएं निभाती हैं जो सामान्य भूमिकाओं की तुलना में कहीं अधिक यथार्थवादी होती हैं। शोभिता ने हाल ही में अपनी फिल्म को मिली प्रशंसा पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि सितारा उनके लिए मजबूत और संवेदनशील का एक शानदार मिश्रण है। फिल्म में वह एक सफल महिला की भूमिका में हैं जो बहादुरी से हर परिस्थियों का सामना करती है। उन्होंने अपनी पिछली भूमिकाओं से बिल्कुल अलग किरदार निभाने का एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया और जब आलोचक और दर्शक इस निर्णय को स्वीकार करते हैं और सराहना करते हैं, तो यह अत्यधिक प्रेरणा और संतुष्टि लाता है। उन्होंने इस तरह के अनोखे किरदार को निभाने के अपने फैसले के बारे में विस्तार से बताया और तारीफों के लिए आभार व्यक्त किया। दर्शकों ने तारा की जटिल यात्रा को वास्तविक भावना के साथ स्वीकार किया है। साथ ही एक विवाहित और गर्भवती महिला के रूप में उनकी कई भूमिकाओं का आनंद लिया है। केरल की रंगीन पृष्ठभूमि पर आधारित लव, सितारा एक ऐसी दुनिया की मनमोहक झलक पेश करती है, जहां पारिवारिक रिश्ते, रहस्य और प्यार का जबर्दस्त उथल-पुथल देखने को मिलता है। इंटीरियर डिजाइनर सितारा (शोभिता धूलिपाला) और शेफ अर्जुन (राजीव सिद्धार्थ) कहानी के मुख्य किरदार हैं। दोनों के सुखद रिश्ते में तब नाटकीय मोड़ आ जाता है जब अचानक आया एक प्रस्ताव उनकी योजनाओं में बाधा डालता है। गर्मजोशी भरा और अस्पष्ट, जीवन का यह पारिवारिक नाटक एक आदर्श परिवार के अंदर और बाहर की पड़ताल करता है। साथ ही सतह के पीछे छिपी अनफिल्टर्ड वास्तविकताओं को उजागर करता है। शोभिता ने सितारा नाम की एक मजबूत और आत्मनिर्भर महिला का किरदार निभाया है, जो अपनी शादी की तैयारियों के बीच प्यार और रिश्तों की जटिलता से निपटती है। तारा के रूप में शोभिता की यह तीसरी उपस्थिति है। उन्होंने कालाकांडी (2018) में भी भूमिका निभाई और सफल सीरीज मेड इन हेवन (2019) में मुख्य भूमिका निभाई।

हंसल मेहता की सीरीज गांधी से जुड़े ए आर रहमान

हंसल मेहता गांधी सीरीज लेकर आ रहे हैं। 2 अक्तूबर गांधी जयंती के अवसर पर हंसल मेहता ने अपनी इस आगामी सीरीज का टीजर जारी करते हुए विशेष एलान किया है। हंसल मेहता ने बताया है कि उनके निर्देशन में बन रही इस सीरीज से अब ए आर रहमान भी जुड़ गए हैं। जारी किए गए टीजर में रहमान का संगीत भी सुना जा सकता है। हंसल मेहता ने इंस्टाग्राम पोस्ट साझा किया है। उन्होंने लिखा है, ए.आर. रहमान टीम गांधी में शामिल हुए! गांधी जयंती के अवसर पर, हम महात्मा को याद करते हुए इस सीरीज में रहमान के जुड़ने का एलान करते हुए बेहद रोमांचित हैं।

ए आर रहमान ने जताई खुशी

वहीं, सीरीज से जुड़ने पर ए आर रहमान ने कहा, गांधीजी के युवा जीवन को देखना दिलचस्प है। सत्य, जीवन और कई अन्य चीजों के साथ उनके प्रयोग उनके चरित्र के विकास को दिखाते हैं। इस कहानी के लिए मुझे संगीत तैयार करने का मौका मिल रहा है, इस बात से मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। अप्लॉज एंटरटेनमेंट के सहयोग से और हंसल मेहता निर्देशन में हम कमाल की सीरीज लेकर आ रहे हैं।

फिर विजय के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी पूजा हेगड़े

अभिनेत्री पूजा हेगड़े एक बार फिर सुपरस्टार विजय के साथ पर्दे पर नजर आएंगी। वह आगामी फिल्म थलपति 69 में विजय के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करती नजर आएंगी। अभिनेत्री ने 2022 की फिल्म बीस्ट में विजय के साथ काम किया था। केवीएन प्रोडक्शन ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर यह घोषणा की। फिल्म का निर्देशन एच विनोथ ने किया है, जिन्होंने 2014 में सथुरंगा वेट्टई से निर्देशन की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने थीरन अधिगाराम ओन्ड्रू, नेरकोंडा पारवई, वलीमाई और थुनिवु जैसी फिल्में बनाई हैं। अभिनेत्री पूजा फिलहाल सूर्या की फिल्म सूर्या 44 में व्यस्त हैं। इस फिल्म का निर्देशन जिगरथंडा डबल एक्स के निर्देशक कार्तिक सुब्बाराज कर रहे हैं। फिल्म निर्माता ने अभी तक सारी जानकारी गुप्त रखी है और फैंस सूर्या की अन्य बड़ी रिलीज कांगुवा से पहले एक बड़े अपडेट की उम्मीद कर रहे हैं, जिसका निर्देशन सिरुथाई शिवा करेंगे, जो 14 नवंबर को बड़े पैमाने पर रिलीज के लिए तैयार है। सूर्या 44 के अलावा, उन्होंने हाल ही में देवा की शूटिंग पूरी की, जिसमें उनके साथ शाहिद कपूर और पावेल गुलाटी ने भी किरदार निभाया। इस फिल्म में शाहिद और पावेल पुलिस की भूमिका निभाते नजर आएंगे। फिल्म का निर्देशन मलयालम फिल्म निर्माता रोशन एंड्रयूज ने किया है और इसका निर्माण सिद्धार्थ रॉय कपूर ने किया है। देवा अगले साल 14 फरवरी को रिलीज होगी।

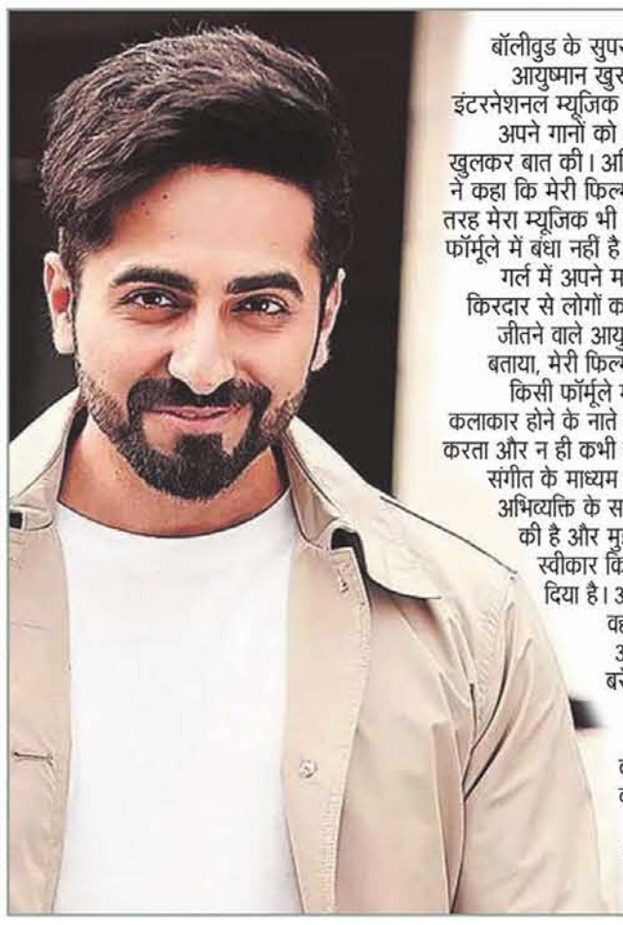

मेरी फिल्मों की तरह मेरा संगीत भी किसी फॉर्मूले में बंधा नहीं है

बॉलीवुड के सुपरस्टार आयुष्मान खुराना ने इंटरनेशनल म्यूजिक डे पर अपने गानों को लेकर खुलकर बात की। अभिनेता ने कहा कि मेरी फिल्मों की तरह मेरा म्यूजिक भी किसी फॉर्मूले में बंधा नहीं है। ड्रीम गर्ल में अपने मजेदार किरदार से लोगों का दिल जीतने वाले आयुष्मान ने अपने गानों के बारे बताया, मेरी फिल्मों की तरह, मेरा संगीत भी किसी फॉर्मूले में बंधा हुआ नहीं है। मैं एक कलाकार होने के नाते कोई खास रूल फॉलो नहीं करता और न ही कभी करना चाहता हूं। मैंने अपने संगीत के माध्यम से हमेशा अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ न्याय करने की कोशिश की है और मुझे खुशी है कि लोगों ने इसे स्वीकार किया है और मुझे इतना प्यार दिया है। अभिनेता ने कहा कि जब भी वह कुछ बनाते है तो वह बेहद अलग और अनोखा होता है। बरेली की बर्फी फेम अभिनेता ने कहा, हर बार कुछ नया बनाना, दूसरों की तरह न करना, किसी ट्रेंड को फॉलो करने के जाल में न फंसना, मेरे लिए बेहद ही रोमांचक चीज है। अगर संभव हो तो मैं एक ट्रेंड सेट करना चाहूंगा। मेरी फिल्में और मेरा संगीत हमेशा इस विश्वास को बनाए रखेंगी जो मैं खुद के लिए रखता हूं। आयुष्मान जल्द ही जचदी ट्रैक में नजर आएंगे। अभिनेता ने कहा कि इस गाने के लिए वह अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकले हैं। आयुष्मान ने कहा, ढोल की थाप के साथ इस गाने का पंजाबी म्यूजिक त्योहार के जोश में और रंग भर देगा। मुझे पूरा यकीन है कि यह गाना नवरात्रि में लोगों को थिरकने पर मजबूर कर देगा। मैं अपने आप को बेहद भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे फिल्मों और अपने संगीत के लिए दर्शकों का बेहद प्यार मिला है। मेरे प्रयासों में निरंतर सहयोग देने के लिए मैं सभी का शुक्रिया अदा करता हूं। अभिनेता ने आगे कहा, मेरे जीवन के उतार-चढ़ाव में संगीत हमेशा से मेरा साथी रहा है। ये वो चीज है, जिससे मैं हर रोज गुजरता हूं। मैंने जचदी में अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर काम किया है। इसमें पंजाबी धुनों को गरबा बीट्स के साथ मिलाना बेहद खास है। मैं आगे भी अलग-अलग चीजें करता रहूंगा।

इन फिल्मों से धमाल मचाएंगे बॉबी देओल

बॉबी देओल हाल ही में विजय की आखिरी फिल्म दलपति 69 में शामिल हुए हैं। इसके अलावा बॉबी कई फिल्मों के जरिए दर्शकों का मनोरंजन करने वाले हैं। बॉबी देओल कंगुवा से साउथ डेब्यू कर रहे हैं, जिसमें सूर्या भी मुख्य भूमिका में हैं। बॉबी बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार के साथ हाउसफुल 5 में भी नजर आने वाले हैं। आलिया भट्ट और शरवरी वाघ के साथ बॉबी अल्फा में भी अभिनय करेंगे। रिपोर्ट्स के अनुसार, बॉबी, शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान की डेब्यू सीरीज स्टारडम का भी हिस्सा हैं।

सेक्टर-123 में 80 एमएलडी क्षमता वाले टीटीपी का शुभारंभ

नोएडा (चेतना मंच)। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) के नियमों का पालन करते हुए नोएडा प्राधिकरण के सीईओ डा. लोकेश एम ने गुरूवार को सेक्टर-123 स्थित सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट परिसर में नवनिर्मित टीटीपी (तृतीयक उपचार संयंत्र) 80 एमएलडी का उद्घाटन किया गया। इस टीटीपी के निर्माण से शोधित जल की गुणवत्ता, गंदापन की प्रकृति को काफी कम किया जा सकेगा। नवनिर्मित टीटीपी के उद्घाटन कार्यक्रम के बाद नोएडा सीईओ डा. लोकेश एम ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि नवनिर्मित टीटीपी के निर्माण से शोधित जल की गुणवत्ता, गंदापन की प्रकृति को काफी कम किया जा सकेगा। जिसके फलस्वरूप इसका टीएसएस की मात्रा को मानक के अनुरूप नियंत्रण किया जाना संभव हो सकेगा। यह टीटीपी तकनीकी पर अधारित है। इसके फलस्वरूप शोधित सीवेज जल की गुणवत्ता में मानक जैसे सीओडी, बीओडी एवं फेकल की मात्रा और अधिक नियंत्रित कर सकेंगे एवं इको सिस्टम के अनुरूप सभी प्रकार से तथा एनजीटी के दिशा निर्देशों के क्रम में उपचारित किया जा सकेगा।

उन्होंने बताया कि वर्तमान में इस प्लांट से 10-12 एमएलडी शोधित जल का उपयोग सेक्टर-69, 70, 71, 121, 122 एवं 123 के पार्कों एवं ग्रीन बेल्ट में किया जा रहा है। तथा आगामी एक वर्ष में लगभग 18-20 एमएलडी जल का उपयोग करने के लिए सेक्टर- 74, 76, 77, 78, 79, 115, 116, 117 इत्यादि में शोधित जल नलिकायें बिछाने का कार्य प्रगतिरत है। इसी परिसर से भविष्य में एनटीपीसी दादरी के लिए शोधित जल उपलब्ध करने के दिशा-निर्देश राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) द्वारा दिये गये हैं।

सेक्टर-26 पहुंची 'नोएडा आपके द्वार' टीम

नोएडा (चेतना मंच)। 'नोएडा आपके द्वार' कार्यक्रम के तहत प्राधिकरण अधिकारियों ने गुरूवार को सेक्टर-26 का दौरा किया। इस दौरान अधिकारियों ने बैठक कर सेक्टरवासियों की समस्याएं सुनी और उनके तत्काल निस्तारण का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के दौरान सेक्टरवासियों द्वारा नोएडा प्राधिकरण के विभिन्न विभागों की 16 समस्याएं दर्ज कराई गई।

बैठक आरडब्ल्यूए के प्रतिनिधियों द्वारा सेक्टर-26 के सी-ब्लॉक पार्क में ओपन जिम की मरम्मत कराने, कालीबाडी मंदिर के साथ लगी खाली जगह को विकसित करने, समस्त पार्कों में प्ले स्टेशन बनाये जाने, सेक्टर-26 में निर्मित पार्कों की बाउण्ड्री की मरम्मत कराने सहित अन्य मांग की गई। बैठक के दौरान पानी व बिजली से संबंधित समस्याओं पर भी आरडब्ल्यूए प्रतिनिधियों ने प्राधिकरण अधिकारियों ने वार्ता की। सेक्टरवासियों की समस्याएं सुनने के पश्चात प्राधिकरण अधिकारियों ने उन्हें आश्वासन दिया कि प्राप्त शिकायतों को 10 दिन के अंदर निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराया जाएगा।

श्री सनातन धर्म रामलीला समिति

गणेश वंदना के साथ 39 वर्ष पुरानी रामलीला शुरू

नोएडा (चेतना मंच)। नोएडा स्टेडियम में श्री सनातन धर्म रामलीला समिति की ओर से रत्नाकर ड्रामैटिक आर्ट प्रोडक्शन दिल्ली के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा गणेश पूजन के साथ मंचन पेश किया गया।

गणेश पूजन कर सांसद डॉ. महेश शर्मा, महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष विमला बाथम, उप्र कृषि अनुसंधान परिषद के चेयरमैन कैप्टन विकास गुप्ता, डॉ. वीएस चौहान, टी एन चौरसिया, टी एन गोविल, संजय बाली, अतुल मित्तल, विपिन मल्हन, पीयूष द्विवेदी, सुशील भारद्वाज, रमेश कुमार, शुभकरण सिंह राणा, चंद्रपाल सिंह प्रमोद रंगा, पंकज जिंदल, सुनील गुप्ता आदि काफी संख्या में गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

पहले दिन शिवजी तपस्या में अघोरी का नृत्य, पार्वती का आना आरती कर आसन ग्रहण कर नारद मोह, इंद्र दरबार नृत्य, इन्द्र का सिंघासन डगमगाना, कामदेव द्वारा नृत्य में व्यर्थ प्रयास, कामदेव का अभिमान टूटना, माफी मांगकर निकालना आदि का मंचन किया गया।

सेक्टर-46 श्रीरामलखन लीला कमेटी

नारद मोह व रावण के अत्याचारों का हुआ मंचन

नोएडा (चेतना मंच)। श्री राम लखन लीला कमेटी द्वारा गुरुवार को रामलीला के मंचन का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के नोएडा जिला अध्यक्ष मनोज गुप्ता और उनकी टीम द्वारा सेक्टर-46 के रामलीला ग्राउंड में पूजा पाठ के बाद किया गया।

प्रथम दिन की रामलीला में गणेश पूजन, शिव भगवान द्वारा पार्वती को कथा सुनने की लीला का मंचन, एवं नारद मोह, रावण द्वारा अत्याचार एवं स्वयं की मुक्ति हेतु उपाय की लीला का मंचन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर भाजपा के ही मनीष शर्मा, विनोद शर्मा, उमेश त्यागी, गणेश जाटव, धर्मेंद्र गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने आए हुए मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर रामलीला वाचक पंडित कृष्ण स्वामी द्वारा गणेश पूजन के साथ शिवाजी द्वारा पार्वती को कथा सुनने की लीला के साथ ही राष्ट्रपति पदक विजेता कलाकार द्वारा नारद मोह लीला का मंचन एवं रावण द्वारा अत्याचार में स्वयं को मुक्ति हेतु उपाय की लीला का मंचन हुआ।

इस अवसर पर आयोजन समिति के चेयरमैन मनोज अग्रवाल सीएमडी प्रिया गोल्ड, कुलदीप गुप्ता, राहुल गुप्ता मनीष अग्रवाल, सुभाष शर्मा, प्रदीप अग्रवाल,मुकेश गुप्ता मनोज

वाइस चेयरमैन राजेंद्र जैन, पूनम सिंह, मेला प्रमुख संजय गोयल, स्वागत अध्यक्ष रामवीर यादव,अध्यक्ष विपिन अग्रवाल, महासचिव गिर्राज अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुशील सिंघल सह-कोषाध्यक्ष, मनोज अग्रवाल, मीडिया प्रभारी गौरव यादव, लीला संयोजक पंडित कृष्ण स्वामी, मुख्य संरक्षक आलोक गुप्ता , मुख्य यजमान अशोक गोयल, मुख्य सलाहकार विकास बंसल, मंच संचालक संदीप अग्रवाल, अग्रवाल ,बाबूलाल बंसल,भूपेंद्र मित्तल सौरव डायमंड, निवेदक शरद कुमार सिन्हा, मुकेश गुप्ता, राजीव जैन सीए, शंकर मोदी, सुरेंद्र बंसल, सुनील जैन, वीके गुप्ता, महेश गुप्ता इंदिरापुरम, सौरभ गुप्ता, अरविंद शोरेवाला, केशव गंगल, राकेश गुप्ता, गौरव मित्तल, सौरव मित्तल, हर्षित अग्रवाल, राम अवतार सिंह, अंकुर अग्रवाल, असीम जगिया आदि मौजूद थे।

सेक्टर-62 श्रीराम मित्र मण्डल रामलीला

गणेश पूजन के साथ रामलीला मंचन का हुआ शुभारंभ

नोएडा (चेतना मंच)। श्रीराम मित्र मण्डल नोएडा रामलीला समिति द्वारा सेक्टर-62 के रामलीला मैदान में आयोजित श्रीरामलीला महोत्सव का मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री व क्षेत्रीय सांसद डा. महेश शर्मा एवं विनय गर्ग द्वारा दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग, अध्यक्ष धर्मपाल गोयल एवं महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा व संस्था के पदाधिकारियों द्वारा मुख्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर और अंगवस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

श्रीरामलीला मंचन की शुरूआत श्री गणेश वंदना एवं गणेश पूजन के साथ हुई। गणेश वंदना में कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुति पेश कर दर्शकों का मन मोह लिया।

प्रथम दृश्य में दिखाया गया कि नारद जी को अहंकार हो जाता हैं और भगवान अपने भक्त के अहंकार का समूल नाश करते हैं। भगवान विष्णु अपनी माया से एक माया नगरी बनाते हैं,जिसमें विश्वमोहनी नाम की राजकुमारी का स्वयंवर होता है। नारद जी उस कन्या पर मोहित होकर उससे विवाह करना चाहते हैं और भगवान से सुन्दर स्वरूप मांगते हैं लेकिन भगवान उनको बंदर का स्वरूप प्रदान करते हैं।जब वह सभा में पहुंचते हैं तो शिवगण उनका मजाक उड़ाते हैं और वह कन्या भगवान विष्णु के गले में वरमाला डाल देती है।उपहास से क्रोधित नारद जी भगवान को श्राप दे देते हैं। इधर लंका का राजा रावण राक्षसों के साथ ऋषि मुनियों पर अत्याचार करता हैं। इसी के साथ प्रथम दिवस की रामलीला का समापन भगवान की आरती और प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

रामलीला के अवसर पर समिति के कोषाध्यक्ष राजेन्द्र गर्ग, सह-कोषाध्यक्ष अनिल गोयल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतनारायण गोयल, राजकुमार गर्ग, चौधरी रविन्द्र सिंह, तरुणराज, पवन गोयल, बजरंग लाल गुप्ता, एस एम गुप्ता, अजीत चाहर, गौरव मेहरोत्रा, आत्माराम अग्रवाल, मुकेश गोयल, मुकेश अग्रवाल, मनोज शर्मा, मीडिया प्रभारी मुकेश गुप्ता, गिरिराज बहेडिया, राजेश माथुर, चक्रपाणि गोयल, शांतनु मित्तल, सुधीर पोरवाल, मोतीराम गुप्ता, अर्जुन अरोड़ा, आर के उप्रेती, साहिल चौधरी, कुलदीप गुप्ता, मनीष गोयल सहित श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति के सदस्यगण व शहर के सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्तिथ रहे।

भाजपा की मध्यस्थता से सफाईकर्मियों की हड़ताल समाप्त

नोएडा (चेतना मंच)। भाजपा नेताओं की मध्यस्थता के बाद पिछले कई दिनों से प्राधिकरण के सफ़ाई कर्मचारियों की हड़ताल समाप्त हो गयी है। भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज गुप्ता सेक्टर-6 में हड़ताल कर रहे कर्मचारियों से मिले। उन्होंने एसीईओ संजय खत्री की सफ़ाई कर्मचारियों की यूनियन के साथ उनके साथ बोर्ड रूम में वार्ता कराई। जिसमें यूनियन के पदाधिकारियों ने अपनी माँगे रखी कि धरना दे रहे कर्मचारियों की सैलरी नहीं कटेगी, साथ ही जो कर्मचारी निलंबित किए हैं वो बहाल किए जाएँगे।

इसके साथ उनकी प्रमुख माँग जो कर्मचारियों की सैलरी बढ़ाने की थी। उसके लिए एसीईओ ने तीनों प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ एक कमिटी गठित करने का आदेश दिया। जिसमें यूनियन के लोगो भी रहेंगे और उनकी जल्द बैठक कर इसका भी समाधान कर दिया जाएगा। इन सब माँगों के पूर्ण होते ही सफ़ाई कर्मचारियों ने अपनी हड़ताल ख़त्म कर दी।

इस मौके पर मनोज गुप्ता के अलावा, महामंत्री उमेश त्यागी, गणेश जाटव, ओबीसी मोर्चा अध्यक्ष उमेश पहलवान, उपाध्यक्ष मनीष शर्मा, विनोद शर्मा के अलावा सफ़ाई कर्मचारियों में राधे पारचा, मनोहर वाल्मीकाश कुंडिया, बबली देवी, आनंद बगड़ी, नितिन चौटाला, नितिन नंबरदार, दीपक छजलना, अर्जुन वाल्मीकि, मनोहर वाल्मीक आदि लोग रहे।